RNI No : CHHHIN/2015/64212 | वर्ष – 02 | अंक – 12 | राजनांदगांव | पृष्ठ 32 आवरण सहित

15 जून – 14 जुलाई, 2017

मूल्य 20 रुपए

नेशन अलर्ट

मासिक पत्रिका

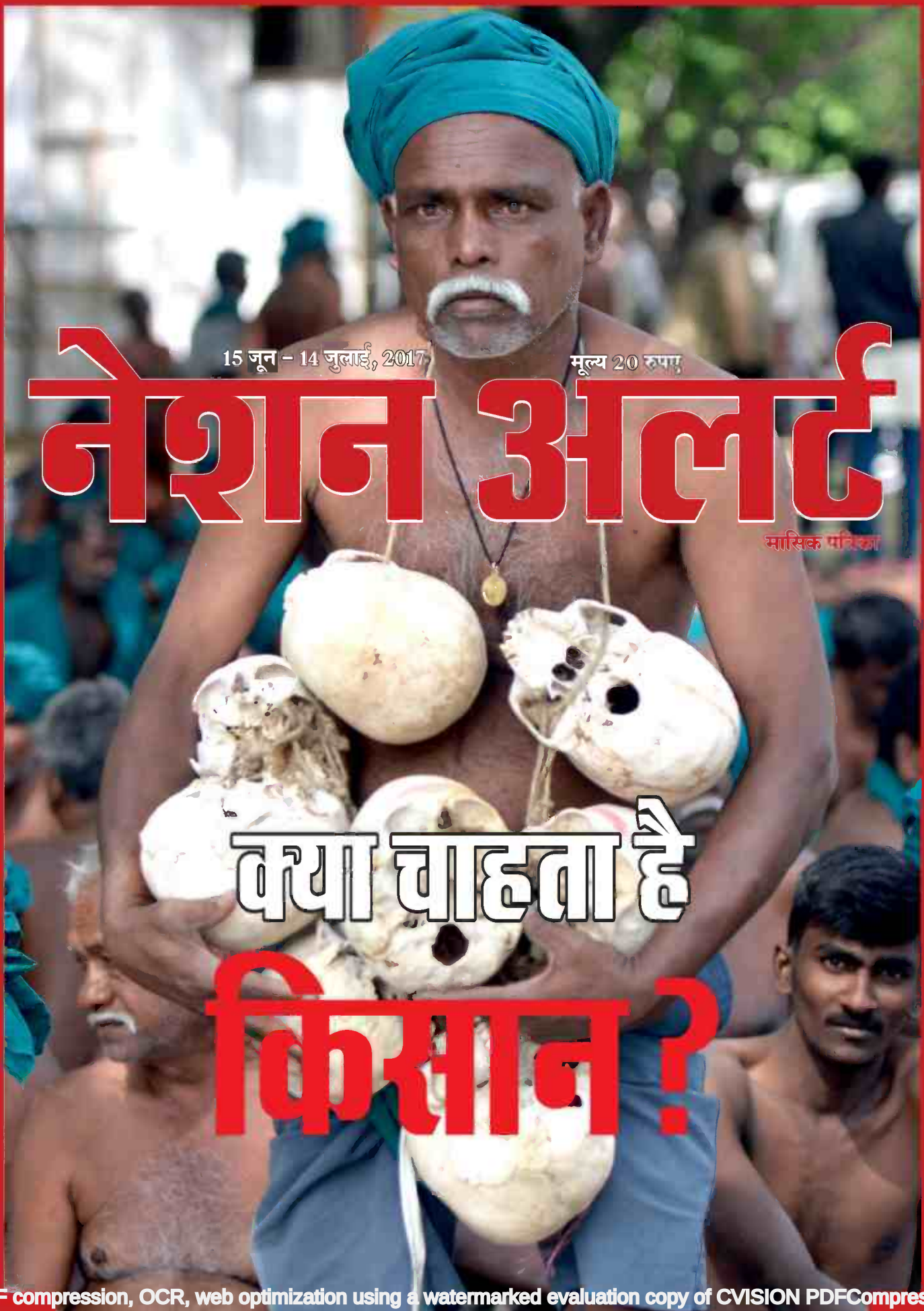

क्या चाहता है किसान ?

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

2nd

★ ANNIVERSARY ★

नेशन अलर्ट

मासिक पत्रिका

की द्वितीय वर्षगांठ पर हार्दिक शुभकामनाएं...

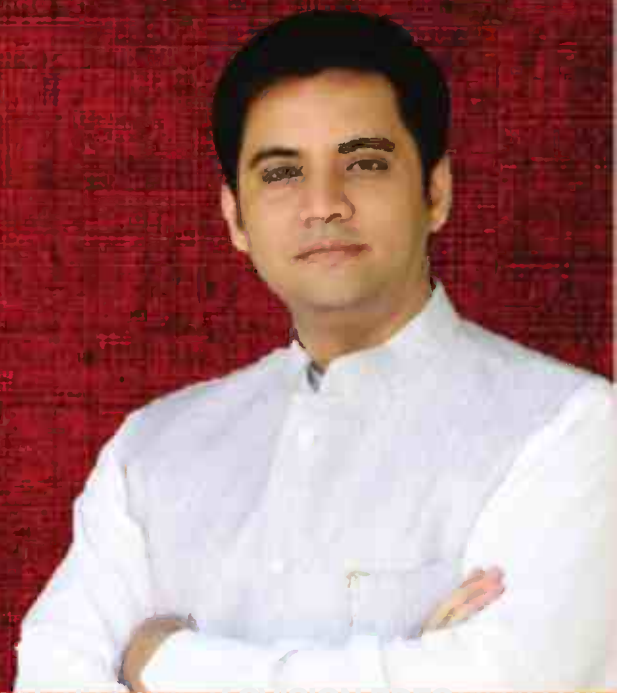

अभिषेक सिंह

सांसद,
राजनांदगांव-कवर्धा संसदीय क्षेत्र

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

श्री पितृ कृपा से...
मासिक पत्रिका
नेशन अलर्ट
■ वर्ष - 02 ■ अंक - 12 ■ जून 2017 ■ पृष्ठ 32 ■ मूल्य 20 रुपए

संपादक: आशीष शर्मा
परामर्शदाता: जरनैल सिंह भाटिया, अतुल श्रीवास्तव, आशीष दुबे, सैय्यद शोएब अली
कार्यकारी संपादक: श्रीमती नीता शर्मा
सहायक संपादक: विक्रम बाजपेयी
संपादकीय सलाहकार: जयदीप शर्मा
ऑपरेशंस संपादक: अशोक शर्मा
फीचर संपादक: आरती शर्मा, रजनी शर्मा
प्रमुख संवाददाता: श्याम शर्मा, सूरज शर्मा
व्यापारिक प्रतिनिधि : राकेश जैन, तुषार साहू
धर्म-आध्यात्म प्रतिनिधि : त्रिलोक सोनी
डिजाइन: वी उपमन्यु
फोटो: जितेंद्र जैन, मनोज देवांगन
संपादकीय एक्जीक्यूटिव: श्रीमती दीनिता शर्मा

विज्ञापन:
सीनियर जनरल मैनेजर: एडी वैष्णव
जनरल मैनेजर: पंकज महेश्वरी
रीजनल मैनेजर: लोकेश सवाणी
सीनियर मैनेजर: हर्षद कुमार

सर्कुलेशन:
स्टेट हेड: पंकज शर्मा
असिस्टेंट जनरल मैनेजर: राजेश शर्मा

प्रोडक्शन:
सीनियर मैनेजर: प्रेमचंद शर्मा
मैनेजर: तेजस कुमार

स्टेट ब्यूरो
छत्तीसगढ़ : धीरेन्द्र शर्मा
दिल्ली एनसीआर : गौरव तिवारी
मध्यप्रदेश : अनिल शर्मा
महाराष्ट्र : अरुण शर्मा
उड़ीसा : आर शर्मा
आंध्रप्रदेश : राकेश शर्मा
तमिलनाडु : नीरज शर्मा

विधि सलाहकार :
रुपेश दुबे, विमल हाजरा

सभी अवैतनिक*

कार्यालय :
'नेशन अलर्ट' प्लॉट नंबर 29, विकास नगर, लखोली, राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)
097706-56789, 097524-11311, 098271-15077
E-mail : nationalertcg@gmail.com

आंचलिक कार्यालय :
धीरेन्द्र शर्मा, सत्तीमाता मंदिर के पास, सत्ती बाजार, रायपुर (छत्तीसगढ़)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक आशीष शर्मा द्वारा श्री बाबा रामदेव प्रिंटर्स, मकान क्रं. 74, वार्ड नं. 37 रानीसागर पूर्व भाग राजनांदगांव छत्तीसगढ़ से मुद्रित कर मकान क्रं. 74, वार्ड नं. 37 रानीसागर पूर्व भाग राजनांदगांव छत्तीसगढ़ से प्रकाशित – संपादक आशीष शर्मा।

■ सभी विवादों का निपटारा राजनांदगांव की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में किया जाएगा।

इस माह | आवरण कथा

क्या चाहता है किसान..?

07 आंध्रप्रदेश

बहुत कुछ बदल गया है..

2004 के चुनावों में नायडू की तेलगू देशम पार्टी की हार बहुत लोगों को वाजपेयी की अगुवाई वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की लोकसभा चुनावों में हुई हार से भी अधिक अप्रत्याशित लगी थी.

13 अर्थशास्त्र

होम लोन : कैसे, कितना और क्या जरूरी..?

लोन लेना आसान प्रोसेस लगेगा, लेकिन कुछ बातें हैं जो आपको होम लोन लेने से पहले ध्यान रखनी चाहिएं..

27 स्पोर्ट्स

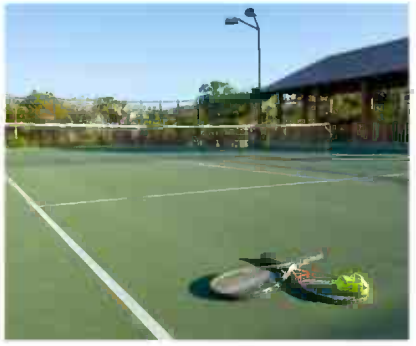

डबल्स के हीरो सिंगल में जीरो

फ्रेंच ओपन के मिक्स्ड डबल्स में भारत ने फिर अपना परचम लहरा दिया है. लेकिन टेनिस के सिंगल्स मुकाबलों में हम पीछे क्यों रह जाते हैं?

20 बॉलीवुड

हिट के लिए मेट..!

शाहरुख की दिलवाले की बात करें या फिर रईस की दोनों ही उनका पहले जैसा जलवा नहीं दिखा सकीं. अब उन्होंने एक बार फिर से रोमांस का हाथ थामा है और इसके लिए उन्होंने इम्तियाज अली का दामन पकड़ा है.

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

विशेष संपादकीय

विक्रम बाजपेयी

क्यूंकि शुरूआत तो ऐसी ही होती है.

धन्यवाद...

इस अंक में इस संपादकीय की शुरूआत के लिए इससे और बेहतर शब्द मुझे सुझा ही नहीं. कभी-कभी ऐसे मौके आते हैं जब शब्दकोश का भंडार भी कम लगने लगता है अपने जज्बातों को बयां करने के लिए. इस अंक के साथ ही 'नेशन अलर्ट' अपने दो वर्ष पूरे कर रहा है.

दो वर्ष.. 24 अंक.. निरंतर.. निर्बाध.. और हम यहीं नहीं रुक रहे हैं. समय की गति के साथ कदमताल करते हुए हमने काफी कुछ समझा है, देखा है और उसमें जो सही था, जो बेहतर था.. उसे अपने साथ जोड़ा है. 'नेशन अलर्ट' एक सीमित संसाधनों के साथ शुरू की गई मासिक पत्रिका थी. जहां सीमित संसाधन हो वहां सपने और आकांक्षाएं बड़ी होती हैं.. क्यूंकि शुरूआत तो ऐसी ही होती है. अपनी शुरूआत के बाद इन दो सालों में 'नेशन अलर्ट' डिजीटल प्लेटफार्म में भी उपलब्ध है. एक वेब न्यूज पोर्टल के रुप में. जिसे आप डब्लूडब्लूडब्लू.नेशनअलर्ट.इन पर देख सकते हैं.

अब जब 'नेशन अलर्ट' देश में इंटरनेट इस्तेमाल करने वाले 34 करोड़ 08 लाख 73 हजार 137 लोगों तक पहुंच सकता है तो हमारी भी जिम्मेदारियां इससे कई प्रतिशत बढ़ जाती है. बीते दो सालों में हमने काफी कुछ नया सीखा और अब वक्त है उसे अपनाने का. दूसरे साल की इस वर्षगांठ के साथ ही, वादा करते हैं आप सभी से कि आने वाले दिनों में हम आपके लिए सर्वश्रेष्ठ बनकर दिखाएंगे.

'नेशन अलर्ट' आने वाले दिनों में और कितने आयाम तय करेगा ये बाद का विषय है. बहरहाल तो ये जितनी भी वर्षगांठ आएंगी वो हमारे लिए सिर्फ एक पड़ाव होंगी, एक अवसर होगा स्वयं के विश्लेषण का. यह वर्षगांठ भी ऐसी ही है.

अंत में... आप सभी का आभार.

★★★

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

इसलिए शाह का बयान मुद्दा बनने से रह गया

समाचार चैनलों ने जब अमित शाह के इस बयान को दिखाना शुरू किया तो भाजपा नेताओं को समझ आ गया कि उनके अध्यक्ष से बड़ी भूल हो गई है

भाजपा अध्यक्ष अमित शाह ने रायपुर में जो कहा उसे सही ठहराने के लिए भाजपा को कड़ी मशक्कत करनी पड़ी. अमित शाह ने रायपुर में कहा था, कांग्रेस किसी एक विचारधारा के आधार पर किसी एक सिद्धांत के आधार पर बनी हुई पार्टी ही नहीं है, वो आजादी प्राप्त करने का एक स्पेशल व्हीकल है. महात्मा गांधी बहुत चतुर बनिया था, उसको मालूम था कि आगे क्या होने वाला है, उसने आजादी के बाद तुरंत कहा था, कांग्रेस को बिखेर देना चाहिए. महात्मा गांधी ने नहीं किया, लेकिन अब कुछ लोग उसको बिखेरने का काम समाप्त कर रहे हैं.

महात्मा गांधी के बारे में इस तरह की भाषा का इस्तेमाल देश के मुख्य दलों के किसी नेता ने कभी नहीं किया. महात्मा गांधी को चतुर बनिया कहना, फिर उन्हें उसको और उसने कहकर संबोधित करना, ये राष्ट्रपिता का असम्मान करने के बराबर था.

मुंह से बात निकल गई थी इसलिए वापस ली नहीं जा सकती थी. चूंकि अमित शाह ने ये बातें सार्वजनिक कार्यक्रम में कही थीं, इसलिए उनके भाषण की रिकॉर्डिंग राष्ट्रीय मीडिया से लेकर स्थानीय मीडिया तक सबके पास थी. टीवी चैनल्स ने अमित शाह के इस बयान को जब दिखाना शुरू किया तो भाजपा नेताओं को समझ आ गया कि उनके अध्यक्ष से बड़ी भूल हो गई है.

सुनी-सुनाई है कि अमित शाह के निर्देश पर इसके बाद भाजपा नेताओं ने अलग-अलग पत्रकारों से बात की. केंद्र सरकार के कुछ मंत्रियों ने भी कई मीडिया संस्थानों को फोन किया. अमित शाह ने खुद कुछ पत्रकार मित्रों से सीधे बात की और इस बयान को प्रमुखता से न दिखाने का अनुरोध किया. इसी का नतीजा था कि जो बयान सुबह तेजी से खबरों में आया दोपहर होते-होते खबरों से गायब हो गया.

विपक्षी दल के नेताओं ने भी तब तक ये बातें सुन ली थीं. उनमें से कांग्रेस के प्रवक्ताओं ने अमित शाह और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से माफी मांगने को कहा. कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता रणदीप सुरजेवाला ने तो यहां तक कहा कि अमित शाह की बातें दिखाती है कि भाजपा का चरित्र और विचारधारा कैसी है. पश्चिम बंगाल से ममता बोलीं कि अमित शाह का बयान अमर्यादित है. सीपीएम के प्रकाश करात ने इस बयान को भाजपा और आरएसएस की महात्मा गांधी के प्रति सोच का नतीजा बताया. लेकिन जब अमित शाह की खबर ही चैनल्स से हट गई थी तो ये बयान भी ज्यादा नहीं दिखाए गए.

रायपुर में जब पत्रकारों ने खुद अमित शाह से उनके बयान पर सफाई मांगी तो उन्होंने कह दिया वे महात्मा गांधी को दूरदर्शी बता रहे थे.

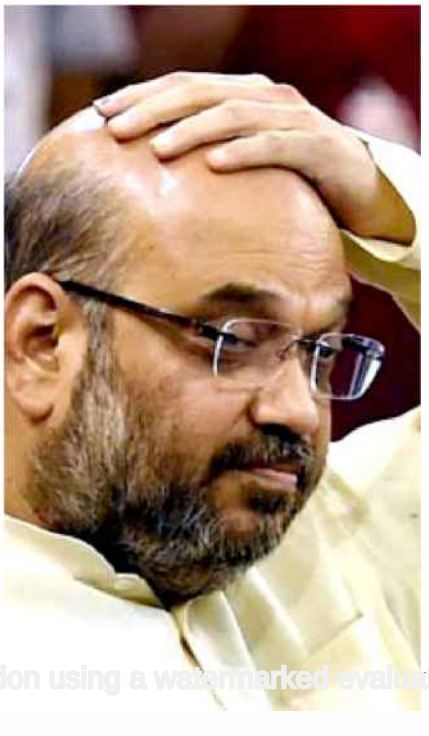

अमित शाह के साथ दूसरी बार हुआ है जब उन्होंने ऐसी गलती की है. पिछली बार वे भाजपा अध्यक्ष की हॉट सीट पर नए थे और एक इंटरव्यू में उन्होंने प्रधानमंत्री के हर खाते में 15 लाख लौटाने के वादे को जुमला बता दिया था. उस वक्त से यह शब्द भाजपा से चिपक गया और विरोधी बार-बार उसे ‘भारतीय जुमला पार्टी’ कहकर बुलाने लगे. इस बार भी ऐसी गलती हुई और चतुर बनिया शब्द फिर अमित शाह पर चिपक सकता है.

इस पूरे प्रकरण में एक सवाल उठता है, अगर अमित शाह के मुंह से कोई गलत बयान निकलता है तो फिर उसे प्रसारित करना मुश्किल क्यों हो जाता है? इस सवाल का जवाब एक वरिष्ठ टीवी पत्रकार कुछ यूं देते हैं, दरअसल अमित शाह छोटी-छोटी बात दिल पर ले लेते हैं. वे इस वक्त देश के प्रमुख नेताओं में से अपनी छवि को लेकर सबसे ज्यादा सजग रहने वाले व्यक्ति हैं. इसलिए उनके खिलाफ खबर दिखाना या लिखना थोड़ा मुश्किल काम है.

गुजरात के एक पत्रकार बताते हैं कि दिल्ली के पत्रकारों के लिए ये नया हो सकता है क्योंकि जब केंद्र में यूपीए की सरकार थी उस वक्त सरकार, उसके मंत्रियों और राहुल गांधी की भी मीडिया में जबरदस्त आलोचना होती थी. लेकिन मोदी और अमित शाह जब गुजरात में थे तो उस वक्त गुजरात की मीडिया को कई बार कुछ बातें नजरअंदाज करनी पड़ती थीं.

लेकिन भाजपा के एक सांसद जो अपनी बयानबाजी की वजह से पार्टी नेतृत्व को नाराज कर चुके हैं, एक अलग ही बात कहते हैं, अगर कोई सांसद या प्रदेश का नेता ऐसी बात कहता तो उसे डांट पड़ती, उसे चुप रहने को कहा जाता. अब पार्टी अध्यक्ष ने ऐसा बयान दे दिया तो उन्हें कौन समझाएगा.

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

शिवराज बनाम सिंधिया या कमल बनाम कमलनाथ

काफी संभावना है कि मध्य प्रदेश में 2018 का विधानसभा चुनाव शिवराज बनाम सिंधिया या कमल बनाम कमलनाथ हो...

मध्य प्रदेश कांग्रेस में नेतृत्व परिवर्तन की संभावनाएं बन रही हैं. राज्य की राजनीति पर नजर रखने वालों की मानें तो कांग्रेस के मौजूदा प्रदेश अध्यक्ष अरुण यादव का अब तक का प्रदर्शन पार्टी नेतृत्व को ज्यादा प्रभावित नहीं कर सका है लिहाजा देर-सबेर प्रदेश की कमान किसी अन्य नेता को दी जाना तय है. इसके लिए दो नाम सबसे ज्यादा चर्चा में हैं. पहला- कमलनाथ और दूसरा- ज्योतिरादित्य सिंधिया.

खबरें हैं कि इनमें से कमलनाथ को कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी मध्य प्रदेश भेजना चाहती हैं. जबकि सिंधिया को पार्टी उपाध्यक्ष राहुल गांधी. शायद यही वजह है कि अब तक इस बाबत कोई फैसला नहीं हो सका है. लेकिन अनिर्णय की इस स्थिति से फायदा उठाने की कोशिश पार्टी के भीतर और बाहर, भरपूर हो रही है. भीतर यूं कि कमलनाथ और सिंधिया के समर्थक अपने-अपने नेताओं के समर्थन में मीडिया के तमाम प्लेटफॉर्म पर खबरें छपवा रहे हैं. यह बताने-समझाने की जुगत कर रहे हैं कि उनके नेता का दावा ज्यादा मजबूत है. जबकि बाहर सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी यह संदेश देने की कोशिश में है कि जो पार्टी सर्वसम्मति से नया अध्यक्ष तक न चुन पा रही हो, उसके हाल का खुद अंदाजा लगाया जा सकता है.

इसके बावजूद भाजपा की तैयारियों और दोनों पार्टियों के सूत्रों से बातचीत के आधार पर कुछ-कुछ अंदाजा तो लगाया ही जा सकता है. मसलन- एक तो यही कि मध्य प्रदेश में अगला विधानसभा चुनाव सिंधिया बनाम शिवराज या कमल बनाम कमलनाथ भी हो सकता है. कांग्रेस में पैदा हुई इस हलचल के बहाने उभरकर सामने आई ऐसी ही कुछ संभावनाओं पर एक नजर.

1. कमलनाथ या सिंधिया में से कोई एक प्रदेश में पार्टी का चेहरा हो, दूसरा केंद्र में रहे

इसमें सबसे पहली संभावना तो यही है कि कमलनाथ या ज्योतिरादित्य सिंधिया में से किसी एक को प्रदेश कांग्रेस का अध्यक्ष बनाने के साथ प्रचार अभियान का प्रमुख या मुख्यमंत्री पद का प्रत्याशी घोषित कर दिया जाए और दूसरे को केंद्र में रखा जाए. केंद्र में इस वक्त कांग्रेस संसदीय दल के नेता और उपनेता के पद खाली हैं. अब तक यह जिम्मेदारी क्रमशः मल्लिकार्जुन खड़गे और कैप्टन अमरिंदर सिंह संभालते थे. इनमें से खड़गे को संसद की लोक लेखा समिति (पीएसी) का अध्यक्ष बनाया जा चुका है जबकि कैप्टन अमरिंदर पंजाब के मुख्यमंत्री बन चुके हैं. ऐसे में संसद के मानसून सत्र के पहले इन पदों पर नई नियुक्तियां तय हैं.

लिहाजा अटकलें हैं कि कमलनाथ अगर प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाते हैं तो सिंधिया को कांग्रेस संसदीय दल का नेता या उपनेता बनाया जा सकता है. वैसे ज्यादा संभावना सिंधिया को उपनेता बनाए जाने की है. जानकारों के मुताबिक इस पद के लिए सिंधिया के पक्ष में तीन बातें हैं. पहला- वे पार्टी संसदीय दल के मुख्य सचेतक हैं. दूसरा- राहुल गांधी के करीबियों में गिने जाते हैं. तीसरा- लोकसभा में उनके प्रदर्शन से पार्टी नेतृत्व संतुष्ट बताया जाता है. इस आधार पर किसी को अचरज नहीं होगा, अगर उन्हें लोकसभा में पार्टी संसदीय दल का नेता भी बना दिया जाए. वहीं, अगर सिंधिया को प्रदेश की कमान सौंपी जाती है तो कमलनाथ को पार्टी संसदीय दल का नेता बनाया जा सकता है.

हालांकि इसी में पेंच ये भी है कि कमलनाथ और सिंधिया दोनों चाहते हैं कि उन्हें मध्य प्रदेश में पार्टी मुख्यमंत्री पद का प्रत्याशी घोषित कर दे. छिंदवाड़ा लोकसभा सीट से सांसद कमलनाथ का नाम मुख्यमंत्री पद के लिए सबसे पहले 1980 में सामने आया था. लेकिन उस वक्त पार्टी ने आदिवासी नेता शिवभान सिंह सोलंकी को आगे कर दिया. इसके बाद 1993 में फिर कमलनाथ को दिग्विजय सिंह के लिए पीछे हटना पड़ा. साल 2008 में छिंदवाड़ा में पार्टी सम्मेलन आयोजित कर उन्होंने फिर दावेदारी जताई. लेकिन पार्टी चुनाव नहीं जीत सकी.

लेकिन अब जबकि भाजपा को प्रदेश की सत्ता में 15 साल होने जा रहे हैं, तो कमलनाथ को लग रहा है कि उनके लिए यह एक मौका हो सकता है. लिहाजा कहा जा रहा है कि वे पार्टी नेतृत्व पर दबाव बढ़ाने की रणनीति आजमा रहे हैं. संभवतः इसी के तहत अप्रैल के दूसरे पखवाड़े में ये खबरें आईं कि कमलनाथ भाजपा में जा रहे हैं. वे उस वक्त भाजपा में तो नहीं गए, अमेरिका जरूर चले गए और उनके पीछे कांग्रेस को इस खबर का खंडन करना पड़ा. पार्टी के सूत्र सत्याग्रह से बातचीत में मानते हैं कि कमलनाथ की रणनीति ठीक वैसी ही है, जैसे पंजाब में अमरिंदर ने आजमाई थी. यानी पार्टी छोड़ने की धमकी देकर खुद को प्रदेश अध्यक्ष और मुख्यमंत्री पद का प्रत्याशी घोषित कराना.

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

दूसरी तरफ, सिंधिया अलग रणनीति पर चलते नजर आ रहे हैं. खबरों की मानें तो वे पार्टी नेतृत्व को सुझाव दे सकते हैं कि लोकसभा में संसदीय दल के नेता के लिए सबसे उपयुक्त व्यक्ति कमलनाथ हो सकते हैं. क्योंकि उनके पास चार दशक से ज्यादा का संसदीय अनुभव है. वे विभिन्न सरकारों में मंत्री रहे हैं लिहाजा मौजूदा सरकार को ज्यादा प्रभावी तरीके से विभिन्न मुद्दों पर घेर सकते हैं. इसके अलावा सिंधिया ने प्रदेश में भी अपनी सक्रियता बढ़ाई है. ताकि कोई भी निर्णय लेने से पहले राज्य की जनता से उनके जीवंत संपर्क का मसला नेतृत्व के जेहन में जरूर आए क्योंकि अन्य नेताओं की तुलना में कमलनाथ की प्रदेश में कम सक्रियता सबके ध्यान में है ही.

2. कमलनाथ प्रदेश अध्यक्ष और सिंधिया मुख्यमंत्री पद के प्रत्याशी बनाए जाएं

दूसरी संभावना ये बनती है कि कमलनाथ को प्रदेश अध्यक्ष बना दिया जाए. साथ ही सिंधिया को प्रचार अभियान समिति का प्रमुख या मुख्यमंत्री पद का प्रत्याशी घोषित कर दिया जाए. हालांकि, यह संभावना तभी पूरी तरह सच हो सकेगी, जब खुद कमलनाथ इसके लिए राजी हों. सिंधिया के समर्थकों में शुमार होने वाले पार्टी के एक नेता बातचीत में कहते हैं, कमलनाथ जी 72 साल के हो चुके हैं. उनके पास अनुभव है. पार्टी में उनका सम्मान है. उनके नाम पर सब लोग एक साथ एकजुट भी हो जाएंगे. वे कहेंगे तो खुद सिंधिया भी उनके लिए दावेदारी छोड़ देंगे. लेकिन उन्हें इस वास्तविकता को स्वीकार भी कर लेना चाहिए कि आम जनता और कार्यकताओं से जीवंत संपर्क स्थापित करने के लिए जितनी मेहनत सिंधिया कर सकते हैं, उतनी वे नहीं कर पाएंगे.

उनके मुताबिक, सिंधिया की अपील पूरे प्रदेश युवाओं में है. उनके सामने आने से पार्टी कार्यकताओं में भी नया जोश भरेगा. साल 2013 में उन्हें मुख्यमंत्री पद का प्रत्याशी नहीं बनाया गया था. उन्हें चुनाव के लिए बनाई गईं आठ समितियों में से एक- प्रचार अभियान समिति की जिम्मेदारी मात्र दी गई थी. लेकिन तब भी सिंधिया ने जो मेहनत की, उसकी छाप कार्यकताओं के दिमाग में अब तक कायम है. अटेर सहित पिछले कुछ समय में हुए उपचुनाव में उन्होंने जो मेहनत की और उसके जो नतीजे आए, वह भी सबके सामने है. पार्टी के भविष्य के बारे में निर्णय लेते समय खुद कमलनाथ और राष्ट्रीय नेतृत्व को इन तमाम बातों का ख़्याल रखना चाहिए.

3. संगठन जस का तस, कमलनाथ संयोजक, सिंधिया प्रचार अभियान प्रमुख, मुख्यमंत्री का फैसला बाद में

पार्टी के प्रदेश महामंत्री रह चुके एक नेता सत्याग्रह से बातचीत में तीसरी संभावना यह बताते हैं कि कमलनाथ को प्रदेश में संयोजक जैसी कोई जिम्मेदारी दे दी जाए क्योंकि इस वक्त वही एक ऐसे नेता हैं जिसके नाम पर सभी नेता एकजुट हो सकते हैं. वे कहते हैं, लेकिन दूसरी बात यह भी सही है कि बढ़ती उम्र के कारण वे बहुत मेहनत कर पाएंगे, इसमें संदेह होना लाजिमी है. लिहाजा, सिंधिया को प्रचार अभियान की कमान सौंपी जा सकती है. वहीं, अरुण यादव प्रदेश अध्यक्ष के तौर पर अपना काम करते रहें. इनके बीच समन्वय/संयोजन का जिम्मा कमलनाथ को सौंपा जा सकता है क्योंकि उनके पास इस तरह के काम का अनुभव खूब है. वे आगे कहते हैं, जहां तक मुख्यमंत्री पद की बात है तो इसका फैसला चुनाव में पार्टी की जीत के बाद ही लिया जाना चाहिए. इससे पहले यह घातक हो सकता है.

4. नाथ और सिंधिया की दावेदारी के बीच दिग्विजय सिंह और अरुण यादव की भूमिका

प्रदेश नेतृत्व में परिवर्तन की इन अटकलों के बीच पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह और मौजूदा प्रदेश अध्यक्ष अरुण यादव के भविष्य पर भी बात होना लाजिमी है. सो, जैसा कि प्रदेश के एक नेता सत्याग्रह से बातचीत में कहते है, इन दिनों दिग्विजय सिंह की मांग राज्य की राजनीति में कम होती जा रही है. यहां तक कि पिछले उपचुनावों में पार्टी के प्रत्याशियों तक ने उन्हें प्रचार के लिए अपने क्षेत्र में बुलाने में ज़्यादा रुचि नहीं दिखाई. ऐसे में यही मानकर चलना चाहिए कि वे केंद्र में रहेंगे. दिग्विजय सिंह के खेमे के समझे जाने वाले एक अन्य नेता भी थोड़ी झिझक के साथ यह मान लेते हैं. लेकिन साथ में यह भी जोड़ते हैं कि प्रदेश में पार्टी का नेतृत्व जो भी संभालेगा, उसे मजबूती देने का काम दिग्विजय करते रहेंगे.

रही बात मौजूदा प्रदेश अध्यक्ष अरुण यादव की, तो खबरों के मुताबिक, उन्होंने शीर्ष नेतृत्व से अपने लिए कुछ समय मांग लिया है. यह उन्हें शायद मिल भी गया है. बीते शनिवार को राज्य कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता केके मिश्रा ने मीडिया को बताया, प्रदेश अध्यक्ष ने दिल्ली में राहुल गांधी से मुलाकात की है. गांधी ने उनसे कहा है कि वे अपनी जिम्मेदारी निश्चिंत होकर पहले की तरह निभाते रहें. जानकारी के मुताबिक, नेतृत्व से मिले इस आश्वासन के बाद यादव प्रदेश के विभिन्न अंचलों के दौरे पर भी निकल गए हैं. हालांकि, फिर भी खुद उनके समर्थक मान रहे हैं कि नेतृत्व परिवर्तन तो होगा. क्योंकि वजहें चाहे जो रही हों, नेतृत्व की अपेक्षाओं पर यादव पूरी तरह खरे नहीं उतर सके हैं. लेकिन चूंकि वे राहुल गांधी के विश्वस्त हैं, इसलिए उन्हें केंद्र में ठीक-ठाक भूमिका ही मिलेगी.

भाजपा की रणनीति क्या इशारा कर रही है ?

कांग्रेस में नेतृत्व परिवर्तन का इंतजार सत्ताधारी भाजपा को भी है. बल्कि वह तो काफी हद तक मानकर चल रही है कि कांग्रेस 2018 में शिवराज सिंह चौहान के मुकाबले सिंधिया को आगे कर सकती है. शायद इसीलिए खुद शिवराज भी आजकल मौका मिलते ही सिंधिया पर सीधा हमला बोल देते हैं. बीते अप्रैल में धार के मोहनखेड़ा में भाजपा प्रदेश कार्यसमिति के समापन भाषण में भी उन्होंने सिंधिया पर आरोप लगाया. कहा, वे स्वार्थी हैं. शिवपुरी में उन्होंने ट्रस्ट की जमीन पर गलत तरीके से निर्माण कराया है. अप्रैल में अटेर विधानसभा उपचुनाव के दौरान भी एक जनसभा में उन्होंने कहा था, सिंधिया परिवार के लोगों ने अंग्रेजों से मिलकर जनता पर अत्याचार किया. इस बयान पर भाजपा के भीतर-बाहर तीखी प्रतिक्रिया हुई.

इसके बावजूद न तो मुख्यमंत्री रुकते नजर आते हैं, न ही पार्टी के अन्य नेता. ताजा मिसाल बीते हफ्ते ही सामने आई, जब यह खबर मिली कि भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और राज्य सभा सदस्य प्रभात झा ने केंद्रीय पर्यटन मंत्री महेश शर्मा को एक पत्र लिखा है. इसमें उन्होंने आरोप लगाया कि सिंधिया राजवंश से जुड़ी ग्वालियर की पुरानी इमारतों को ज्योतिरादित्य किराए पर दे रहे हैं. जबकि ये इमारतें पुरातात्विक महत्व की हैं. पत्र के मुताबिक इन्हें सरकार के संरक्षण में होना चाहिए. इस पत्र की प्रति एक मीडिया संस्था के पास है.

यानी कांग्रेस अभी भले अगले मुकाबले के लिए अपना सेनापति न तय कर पाई हो, लेकिन भाजपा ने महज संभावना के आधार पर अपने हथियारों को धार देना शुरू कर दिया है.

PDF compression, OCR, web-optimization using a watermarked evaluation copy of PDFCompressor

तब और अब में बहुत कुछ बदल गया है..

हाल ही में आंध्र प्रदेश में एन चंद्रबाबू नायडू की सरकार को तीन साल पूरे हो गए. सत्ता से 10 साल का वनवास झेलने के बाद चंद्रबाबू नायडू ने आठ जून, 2014 एक बार फिर आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली थी. पहले जब वे मुख्यमंत्री थे तो तेलंगाना आंध्र प्रदेश का हिस्सा था, लेकिन इस बार वह एक अलग राज्य बन गया था. ऐसे में उनके सामने चुनौतियां बिल्कुल अलग तरह की थीं. चंद्रबाबू नायडू जिस आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री बने उसके पास अपनी कोई राजधानी नहीं थी. जिस हैदराबाद को चंद्रबाबू नायडू ने मुख्यमंत्री के तौर पर 2004 तक जी-जान लगाकर विकसित किया था, वह अब तेलंगाना का हिस्सा था.

2004 में विधानसभा चुनावों में चंद्रबाबू नायडू की तेलगू देशम पार्टी की हार बहुत लोगों को अटल बिहारी वाजपेयी की अगुवाई वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की लोकसभा चुनावों में हुई हार से भी अधिक अप्रत्याशित लगी थी. उस वक्त तक न तो बतौर मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी की कोई खास ख्याति बनी थी और न ही कोई और मुख्यमंत्री नई तरह की सोच वाला दिखता था. आंध्र प्रदेश के बाहर भी बतौर मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू की तारीफ करने वाले लोग मिलते थे.

चंद्रबाबू नायडू की 2004 की हार के विश्लेषण में यह बात निकलकर आई कि उनके शासन काल में हुए अधिकांश विकास कार्य हैदराबाद या यों कहें कि शहरों तक ही सिमटकर रह गए. मुख्यमंत्री के तौर पर उनके अधिकांश फैसलों से फायदा या तो कॉरपोरेट घरानों का हुआ या फिर सेवा क्षेत्र में काम करने वाले पढ़े-लिखे पेशेवरों का. गांवों में रहने वाले लोगों और किसानों की उपेक्षा करने के आरोप उन पर लगे.

अब संतुलन की राह

इस पृष्ठभूमि में जब चंद्रबाबू नायडू के इस कार्यकाल के अब तक के तीन साल को देखा जाए तो पता चलता है कि इस बार वे पिछली बार वाली गलतियां नहीं कर रहे हैं. इस बार शहरों और कॉरपोरेट क्षेत्र के साथ उनकी सरकार किसानों और गांवों के लिए

भी काम करती हुई दिख रही है. कुल मिलाकर देखा जाए तो चंद्रबाबू नायडू इस बार के कार्यकाल में शहरों और गांवों के बीच एक समन्वय बनाते हुए दिख रहे हैं.

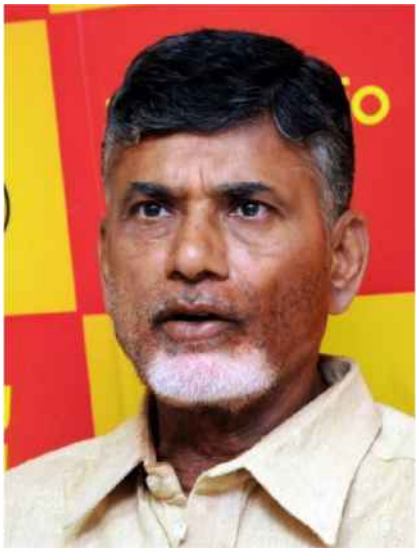

आंध्र प्रदेश की नई राजधानी के तौर पर अमरावती को विकसित किया जा रहा है. जिन लोगों ने भी वहां के काम को जमीनी स्तर पर देखा है या इस परियोजना की रूपरेखा को थोड़ी बारीकी से देखा है, उनका कहना है कि जब अमरावती पूरी तरह से तैयार होगा तो संभवतः यह भारत का सबसे सुनियोजित शहर हो. अमरावती को विकसित करने से उद्योग जगत को तो फायदा होगा ही, साथ ही साथ इसे विकसित करने के लिए जमीन अधिग्रहण का जो मॉडल अपनाया गया उससे यहां उन लोगों को काफी फायदा हुआ जिनकी जमीन नई राजधानी बनाने में गई.

यहां पहले लोगों से जमीन ली गई. फिर उसे सरकार ने शहर के हिसाब से विकसित कराया. इसके बाद जिन लोगों से जमीन ली गई, उन्हें यह विकल्प दिया गया कि अगर वे चाहें तो विकसित जमीन का एक हिस्सा वापस ले सकते हैं. जो नहीं लेना चाहते उन्हें सरकार ने पैसे दिए. जाहिर है कि विकसित होने के बाद और राजधानी का हिस्सा होने के बाद जमीन की कीमतें यहां बढ़ गईं. स्थानीय लोग जमीन बेच सकें और इसका अधिक से अधिक फायदा उन्हें मिले, इसके लिए चंद्रबाबू नायडू ने केंद्र सरकार से आंध्र प्रदेश के लिए जो विशेष पैकेज हासिल किया उसमें यह प्रावधान कर दिया कि इस तरह की जमीन बेचने पर कैपिटल गेन टैक्स की छूट मिलेगी. कैपिटल गेन टैक्स वह कर होता है जो किसी प्रॉपर्टी को खरीदने के दाम और बेचने के दाम के अंतर पर लगता है.

नायडू के इस कार्यकाल में श्रीसिटी एक प्रमुख औद्योगिक हब बनकर उभरा है. यहां मोबाइल बनाने वाली कई कंपनियों ने अपनी इकाइयां लगाई हैं. चीन की प्रमुख मोबाइल निमार्ता कंपनी शाओमी इनमें एक है. इस कंपनी में काम करने वाले अधिकांश लोग शहर से बाहर 70 किलोमीटर के दायरे से आते हैं. कंपनी ने अपने कर्मचारियों को लाने-ले जाने के लिए बस सेवा चला रखी है. अच्छी सड़कों की वजह से यह दूरी भी कर्मचारियों और कंपनी को कम ही लगती है. कुछ समय पहले कंपनी की ओर से यह कहा गया था कि राज्य सरकार इस तरह के कामकाजी मॉडल को प्रोत्साहन दे रही है. कई दूसरी कंपनियां भी इस तर्ज पर काम कर रही हैं. इस तरह के प्रयोगों से गांवों में खुशहाली आ रही है. कहा जाए तो इस बार चंद्रबाबू नायडू औद्योगीकरण को गांव और शहर को जोड़ने वाली कड़ी बना रहे हैं. उदाहरण के तौर एशियन पेंट की 1,750 करोड़ निवेश वाली परियोजना विशाखापट्टनम के पास एक गांव पुद्दी में लगाई जा रही है.

अपने पिछले कार्यकाल में पूरी तरह से बाजार के अनुकूल होने की पहचान बनाने वाले चंद्रबाबू नायडू ने इस कार्यकाल में कई कल्याणकारी या यों कहें कि लोकलुभावन कदम उठाते हुए भी दिख रहे हैं. उदाहरण के तौर पर उनकी सरकार ने सरकारी बसों में वरिष्ठ नागरिकों को किराये में 25 फीसदी की छूट दी है. इसके अलावा बुजुर्गों के लिए शुरू की गई एनटीआर भरोसा योजना के तहत दी जाने वाली पेंशन की रकम उन्होंने 200 रुपये से बढ़ाकर 1,000 कर दी है. दिव्यांगों को इस योजना के तहत पहले जहां हर महीने 500 रुपये की आर्थिक मदद मिल रही थी, वहीं अब उन्हें 1,500 रुपये मिलेंगे. तेज गति से चलने वाला इंटरनेट सिर्फ शहरों तक सीमित न रहे बल्कि गांव-गांव तक पहुंचे, इसके लिए नायडू सरकार माइक्रोसॉफ्ट के साथ मिलकर एक योजना पर काम कर रही है.

कुल मिलाकर देखा जाए तो 2004 की अप्रत्याशित हार के बाद 2014 में फिर से सत्ता में आए चंद्रबाबू नायडू का काम इस बार बदला-बदला नजर आ रहा है.

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

इसलिए समय से पहले हो सकते हैं चुनाव

नीलेश द्विवेदी

कर्नाटक में राजनीतिक हलचल तेज है. सत्ताधारी कांग्रेस और विपक्षी भाजपा, दोनों खेमों की तैयारियां कुछ इस तरह की हैं जैसी चुनाव के आसपास किसी राज्य में अमूमन देखी जाती हैं. संभवतः इसीलिए अटकलें लगाई जाने लगी हैं कि कर्नाटक में निर्धारित समय से पहले ही विधानसभा चुनाव कराए जा सकते हैं. वैसे, तय वक्त के हिसाब से राज्य विधानसभा चुनाव अगले साल अप्रैल-मई में होने चाहिए. लेकिन इस वक्त भाजपा के कद्दावर नेता और राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री बीएस येद्दियुरप्पा तक इस साल दिसंबर में ही चुनाव की अटकलें लगा रहे हैं. इसके पीछे कई कारण हैं.

जल्द चुनाव का पहला संकेत तो यही है कि भाजपा और कांग्रेस, दोनों ने अपने मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार घोषित कर दिए हैं. मई के आखिरी हफ्ते में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह राज्य के दौरे पर थे. वहां उन्होंने पार्टी की तरफ से 74 वर्षीय येद्दियुरप्पा को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित कर दिया. मई-2014 में केंद्र में नरेंद्र मोदी की सरकार बनने के बाद कर्नाटक दूसरा राज्य है जहां भाजपा ने मुख्यमंत्री पद का प्रत्याशी चुनाव से पहले ही घोषित किया है. इससे पहले सिर्फ असम में तत्कालीन केंद्रीय मंत्री सबार्नंद सोनोवाल को पार्टी ने चुनाव के लिए चेहरा बनाया था. अन्य सभी राज्यों में भाजपा अब तक प्रधानमंत्री मोदी के चेहरे को ही आगे रखकर चुनाव में उतरी है.

इसी तरह कांग्रेस मौजूदा मुख्यमंत्री सिद्धारमैया की अगुवाई में ही चुनाव में उतरने जहा रही है. यह बात मई में उस वक्त ही तय हो चुकी थी जब नंजनगुड़ और गुंडलूपेट विधानसभाओं के उपचुनाव में कांग्रेस ने जीत दर्ज की थी. पंजाब विधानसभा चुनाव का अनुभव भी कांग्रेस के सामने था जहां उसने कैप्टन अमरिंदर सिंह की अगुवाई में उन्हें पूरी छूट देकर चुनाव लड़ा और जीत हासिल की. बताया जाता है कि उस वक्त दिल्ली में सिद्धारमैया ने पार्टी उपाध्यक्ष राहुल गांधी से मुलाकात की थी. तब उन्होंने वादा किया था कि अगर उन्हें भी टिकट वितरण और चुनाव रणनीति तय करने की छूट मिले तो वे राज्य में पार्टी को दोबारा सत्ता में ला सकते हैं. राहुल ने उनके इस प्रस्ताव को मंजूर कर लिया था.

शक्ति संतुलन साधने की कवायद

भाजपा में येद्दियुरप्पा को बड़ी चुनौती केएस ईश्वरप्पा से मिल रही है. वर्तमान में राज्य विधान परिषद में विपक्ष के नेता ईश्वरप्पा बहुत पहले से येद्दियुरप्पा के प्रतिद्वंद्वी रहे हैं. पांच साल पहले जुलाई 2012 में जब भाजपा ने येद्दियुरप्पा के विश्वासपात्र डीवी सदानंद गौड़ा को मुख्यमंत्री पद से हटाया था तब ये सत्ता के इस शीर्ष पद के दावेदार थे. उस वक्त बीच का रास्ता निकालकर पार्टी ने जगदीश शेट्टार को मुख्यमंत्री पद की कमान सौंपी और ईश्वरप्पा को उपमुख्यमंत्री बनाया था. अब फिर अपनी सांगोली रायन्ना ब्रिगेड के बल पर वे येद्दियुरप्पा की नाक में दम कर रहे हैं. हालांकि खबरें हैं कि पार्टी ने उन्हें मना लिया है और वे भी येद्दियुरप्पा की अगुवाई में चुनाव में उतरने को तैयार हो गए हैं.

कांग्रेस में इसी तरह की चुनौती सिद्धारमैया को जी परमेश्वरा से बताई जाती है. ये 2013 में पार्टी की ओर से मुख्यमंत्री पद के दावेदार थे. लेकिन विधानसभा चुनाव हार गए और उन्हें सिद्धारमैया के लिए अपनी दावेदारी छोड़नी पड़ी. लेकिन शायद मन से वे पूरी तरह सिद्धारमैया को नेता मान नहीं पाए हैं. इसीलिए उनका असंतोष भी जब-तब बाहर आता रहता है. जैसे पिछले साल इन्हीं दिनों एक कार्यक्रम के दौरान उन्होंने सवाल उठाया था कि कोई ह्यदलित मुख्यमंत्री क्यों नहीं हो सकता?ह्व उस वक्त तो यहां तक खबरें आई थीं कि मुख्यमंत्री के साथ उनकी बातचीत तक बंद हो चुकी है. बहरहाल अब पार्टी ने उन्हें प्रदेश अध्यक्ष बनाया है. परमेश्वरा ने भी गृह मंत्री का पद छोड़कर पूरा समय संगठन को देने का फैसला किया है.

जातीय समीकरणों पर नजर

राज्य में राजनीतिक रूप से दो बड़े समुदाय प्रभावी हैं- लिंगायत और वोक्कालिगा. दोनों समुदायों के वोट करीब 31 फीसदी होते हैं. भाजपा के पास लिंगायत समुदाय से बड़े चेहरे के रूप में येद्दियुरप्पा तो हैं लेकिन वोक्कालिगा समुदाय से कोई असरदार नाम नहीं था. इसीलिए इस समुदाय से ताल्लुक रखने वाले कांग्रेस के दिग्गज और पूर्व विदेश मंत्री एमएम कृष्णा का पार्टी ने बीते मार्च में खुली बांहों से संगठन में स्वागत किया. यही वजह रही कि ईश्वरप्पा को उनकी खुली बगावत के बावजूद पार्टी नेतृत्व ने सिर्फ समझा-धमका कर ही काम चला लिया क्योंकि वे कुरुबा समुदाय से आते हैं. अन्य पिछड़ा वर्ग से आने वाला यह समुदाय राज्य में नौ फीसदी वोट हिस्सेदारी रखता है. इसके साथ ही ईश्वरप्पा रायन्ना ब्रिगेड के जरिए दलित, आदिवासी और पिछड़ों को गोलबंद भी कर रहे हैं.

ऐसे ही कांग्रेस में मुख्यमंत्री सिद्धारमैया कुरुबा समुदाय से ताल्लुक रखते हैं. इसलिए पार्टी ने प्रदेश इकाई की कमान दलित समुदाय से आने वाले परमेश्वरा को सौंपी है. इसके अलावा पार्टी में एक और कद्दावर नेता एसआर पाटिल लिंगायत समुदाय से ताल्लुक रखते हैं. वे प्रदेश अध्यक्ष के दावेदार थे लेकिन पार्टी ने नई व्यवस्था के तहत उन्हें उस उत्तर कर्नाटक क्षेत्र का कार्यकारी अध्यक्ष बना दिया जहां लिंगायत समुदाय का असर ज्यादा है. राज्य के दो ब्राह्मण मुख्यमंत्रियों में से एक आर गुंडूराव के पुत्र दिनेश गुंडूराव को दक्षिण कर्नाटक का कार्यकारी अध्यक्ष बनाया गया है. वहीं वोक्कालिगा समुदाय से आने वाले नेता डीके शिवकुमार को प्रचार अभियान समिति की कमान दी गई है.

यानी दोनों तरफ से बिसात बिछ चुकी है. बस अब चुनावी जंग के औपचारिक ऐलान की देरी है. चुनाव तय समय पर हों या उससे पहले लेकिन इतना निश्चित है कि दोनों पार्टियों के लिए राह आसान नहीं होने वाली. खास तौर पर जिस तरह दोनों ही दल अपने ही अंदरखानों में संतुलन बिठाने की मशक्कत करते दिख रहे हैं उसके मद्देनजर तो यही लगता है.

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मुख्य बिंदु बन गए पवार..!

हिमांशु शेखर

किंग नहीं तो हमारे किंगमेकर बनिए! राष्ट्रपति चुनाव के लिए विपक्ष का उम्मीदवार बनने की पेशकश खारिज करने वाले राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के मुखिया शरद पवार को कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी का संदेश कुछ ऐसा ही है. 76 वर्षीय शरद पवार के कंधे पर अब गैर भाजपा पार्टियों की तरफ से ऐसे उम्मीदवारों पर सहमति बनाने का जिम्मा है जिन्हें जीत की उम्मीद के साथ आगामी राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति चुनाव में उतारा जा सके.

बताया जा रहा है कि सोनिया गांधी ने इस काम के लिए एक समिति बनाई है. इसमें पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और माकपा के महासचिव सीताराम येचरी जैसे दिग्गज शामिल हैं. शरद पवार को इस समिति का संयोजक बनाया गया है. बीती 26 मई को सोनिया गांधी द्वारा बुलाए गए भोज में शामिल हुईं 17 विपक्षी पार्टियों के नेताओं ने यह समिति बनाने का जिम्मा कांग्रेस अध्यक्ष पर ही डाल दिया था. सोनिया गांधी ने अब इस कवायद की कमान शरद पवार को दे दी है.

जब केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार ने राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी प्रमुख शरद पवार को पद्म विभूषण देने की घोषणा की थी तो कई लोगों को लगा था कि मोदी उन्हें अपने करीब लाने की कोशिश कर रहे हैं. भारतीय जनता पार्टी के करीब उनकी पार्टी 2014 में तब आती दिखी थी जब महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में उसे स्पष्ट बहुमत नहीं मिला. भाजपा की पुरानी सहयोगी शिव सेना अलग से चुनाव लड़ी थी और एक बार को वहां ऐसा लगने लगा था कि अगर शिव सेना ने भाजपा को सरकार बनाने के लिए समर्थन नहीं दिया तो शरद पवार की पार्टी यह काम कर देगी.

मौजूदा केंद्र सरकार के अब तक के कार्यकाल में कई मौके ऐसे आए जब यह लगा कि शरद पवार और नरेंद्र मोदी करीब आ रहे हैं. 2014 लोकसभा चुनावों के प्रचार के दौरान नरेंद्र मोदी ने खुद पवार पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए थे. ऐसे में मोदी की अगुवाई वाली सरकार ने जब उन्हें पद्म विभूषण से नवाजा तो बहुत लोगों को आश्चर्य हुआ. अब यही पवार भाजपा विरोधी या यों कहें कि नरेंद्र मोदी विरोधी मोर्चा खड़ा करने की मुख्य धुरी बन गए हैं.

पवार को इस भूमिका के लिए तैयार करने के मकसद से कुछ समय पहले खुद कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी उनके घर गए थे. बताया जा रहा है कि उस मुलाकात में राहुल गांधी ने पवार से अनुरोध किया कि वे उन दलों को भाजपा विरोधी मोर्चे में शामिल करने के लिए प्रयास शुरू करें जो अब तक न भाजपा के साथ हैं और न कांग्रेस के. इसके अलावा शरद पवार को वाम दलों से बातचीत और उन्हें भी इस मोर्चे से जोड़ने की जिम्मेदारी दी गई.

इसके कुछ दिन बाद शरद पवार के 10 जनपथ पहुंचे. यह कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी का आवास है. पवार आखिरी बार सोनिया गांधी के घर 2012 में गए थे. वह भी तब जब उस वक्त की संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार में कुछ सहयोगी कांग्रेस से असंतुष्ट दिख रहे थे और गठबंधन में दरार आने की आशंका थी. कांग्रेस के अंदर पवार ही थे जिन्होंने सोनिया गांधी के विदेशी मूल के होने का मुद्दा उठाया था और कांग्रेस से बाहर हो गए थे. तब से सोनिया से उनके संबंध सामान्य नहीं हो पाए थे. लेकिन अब साफ है कि यह कड़वाहट पीछे छूट चुकी है. अब राष्ट्रपति चुनाव के लिए उम्मीदवार तय करने के लिहाज से वे विपक्ष के संयोजक हैं. लेकिन जानकारों के मुताबिक यह सिर्फ राष्ट्रपति चुनाव की ही बात नहीं है. एक तरह से शरद पवार के कंधों पर मोदी सरकार के सामने हर मोर्चे पर पस्त होते दिखते विपक्ष को खड़ा करने का भी जिम्मा है.

दरअसल, यही विपक्ष और खुद शरद पवार के लिए भी सबसे पहली और बेहद अहम चुनौती है. राष्ट्रपति चुनावों को लेकर भाजपा और उसके सहयोगी ऐसी जगह पर खड़े हैं, जहां उनके उम्मीदवार का जीतना लगभग तय माना जा रहा है. ऐसे में पवार की राजनीतिक सूझबूझ की पहली बड़ी परीक्षा राष्ट्रपति चुनाव ही होगा.

अब सवाल यह उठता है आखिर पवार में ऐसा क्या है कि वे विपक्ष खड़ा करने के लिहाज से इतने अहम हो गए हैं? सबसे पहली बात तो यह है कि उनका बहुत लंबा राजनीतिक अनुभव है. भाजपा के भी वरिष्ठ नेताओं से बात की जाए तो वे पवार की राजनीतिक सूझबूझ की दाद देते हैं. देश का राजनीतिक वर्ग यह मानता है कि पवार ऐसे नेता हैं जो सियासत की बारीकियों को बखूबी समझते हैं.

उनकी दूसरी ताकत ही उनकी सबसे अहम ताकत है. पवार के बारे में कहा जाता है कि हर दल में उनके मित्र हैं. हर दल के प्रमुख नेताओं के साथ पवार के निजी संबंध हैं. किसी भी सियासी गठबंधन को खड़ा करने के लिए यह खूबी बेहद अहम हो जाती है. माना जा रहा है कि छोटे-बड़े क्षेत्रीय दलों को एक साथ लाकर एक मजबूत विपक्ष खड़ा करने में उनसे अधिक सक्षम नेता अभी विपक्ष के पास कोई नहीं है. बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का नाम भी विपक्षी एकता के धुरी के तौर पर लिया जा रहा है लेकिन उनके बारे में यही बात आ रही है सियासी मोलभाव करने के मामले में पवार उन पर भारी हैं. नीतीश के बारे में यह कहा जा रहा है कि वे विपक्ष का अहम या सबसे प्रमुख चेहरा हो सकते हैं लेकिन पर्दे के पीछे की जोड़-तोड़ में पवार का कोई सानी नहीं है.

लेकिन राष्ट्रपति चुनाव पवार के लिए किसी अग्निपरीक्षा से कम नहीं है. इसमें उनसे यह उम्मीद किया जाना बहुत अधिक होगा कि वे विपक्ष के उम्मीदवार को राष्ट्रपति बनवा दें. क्योंकि भाजपा और उसके सहयोगियों के पास पहले से ही 48.66 फीसदी वोट हैं. यानी अपने उम्मीदवार को जिताने के लिए उन्हें एक फीसदी से थोड़े ही अधिक वोट चाहिए. लेकिन अगर पवार ने पूरे विपक्ष में एक साझा उम्मीदवार के प्रति भी सहमति बना ली तो यह 2019 लोकसभा चुनावों के लिहाज से एक मजबूत विपक्षी गठबंधन की दिशा में अहम मोड़ साबित हो सकता है.

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

थेरेसा मे के लिए महंगी पड़ी ये चाल

अति आत्मविश्वास का यही नजारा पिछले एक साल में ब्रिटेन के दो प्रधानमंत्रियों में देखने को मिला, डेविड कैमरन को जहां अपनी कुर्सी गवां कर खामियाजा भुगतना पड़ा तो वर्तमान प्रधानमंत्री थेरेसा मे को यही खामियाजा अपनी बहुमत गंवा कर भुगतना पड़ रहा है.

अभिनव राजवंश

कहते हैं कि आत्मविश्वास होना अच्छी चीज है, मगर जब यही आत्मविश्वास अति आत्मविश्वास में बदल जाती है तो यह इंसान को मुश्किल में डाल देती है. अति आत्मविश्वास का यही नजारा पिछले एक साल में ब्रिटेन के दो प्रधानमंत्रियों में देखने को मिला, डेविड कैमरन को जहाँ अपनी अति आत्मविश्वास का खामियाजा अपनी कुर्सी गवां कर भुगतना पड़ा तो वर्तमान प्रधानमंत्री थेरेसा मे को यही खामियाजा अपनी बहुमत गँवा कर भुगतना पड़ रहा है.

क्या था मामला

अगर आप से कोई कहे की आप बिना किसी चुनावी झंझट में पड़े अगले तीन साल यानि साल 2020 तक प्रधानमंत्री के पद पर बने रह सकते हैं तो शायद ही कोई चुनावी झंझट में पड़ना चाहेगा. मगर अपनी जीत को लेकर अति आत्मविश्वास से लबरेज थेरेसा मे ने इससे उलट फैसला किया. मे ने ब्रेग्जिट से जुड़े फैसले लेने में सुविधा के खातिर समय से तीन साल पहले ही मध्यावधि चुनाव कराने का फैसला कर लिया, ब्रिटेन का पिछला चुनाव साल 2015 में ही सम्पन्न हुआ था जब की अगला चुनाव 2020 में होना था. हालाँकि, चुनाव परिणामों में कंजर्वेटिव पार्टी को साल 2015 के चुनावों से भी 13 सीट कम ही मिली, और पार्टी बहुमत के 326 के आकंड़े से 8 सीट दूर ही रह गयी. प्रचंड बहुमत की आस लगाए थेरेसा मे के लिए यह किसी झटके से कम न था. अब अति आत्मविश्वास में लिया गया थेरेसा मे का यह फैसला आ बैल मुझे मार कहावत को चरितार्थ करते नजर आ रही है, मे अब प्रधानमंत्री की कुर्सी बचाने के लिए संघर्षरत हैं.

गंवानी पड़ी थी कुर्सी....

अति आत्मविश्वास का ऐसा ही वाकया इंग्लैंड के पूर्व प्रधानमंत्री डेविड कैमरन द्वारा भी देखा गया था. ब्रिटेन के यूरोपीयन यूनियन में बने रहने या बाहर जाने के फैसले को लेकर पिछले साल एक जनमत संग्रह कराया गया था, कैमरन चाहते थे कि इंग्लैंड यूरोपियन

यूनियन में बना रहा और ऐसी ही उम्मीद उन्हें वहां की जनता से भी थी. हालाँकि, जब जनमत संग्रह के नतीजे आये तो कैमरन के उम्मीद के विपरीत ब्रिटेन की जनता ने यूरोपियन यूनियन से बाहर रहने का फैसला सुनाया, और इसी फैसले के बाद कैमरन ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया. हालाँकि अगर कैमरन चाहते तो जनमत संग्रह नहीं भी करा सकते थे, मगर कैमरन का अति आत्मविश्वास उन्हें ले डूबा.

वाजपेयी भी हुए थे शिकार

चुनावों में अपनी जीत को लेकर आस्वस्त होने के कुछ उद्धरण भारत में भी मौजूद है. साल 2004 में भारत में अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व की एनडीए सरकार थी, अपने किये गए कामों और हालिया संपन्न हुए राज्य चुनावों के परिणाम के बाद सत्ता में बैठी सरकार को यह उम्मीद थी की फिर से सत्ता में उन्ही की वापसी होगी और इसी खुशफहमी में अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने अवधि पूरे होने के पहले छह महीने पहले ही चुनाव करवा दिए. हालाँकि उन चुनावों में बीजेपी और सहयोगी दलों को हार का मुंह देखना पड़ा और एनडीए सरकार सत्ता से बाहर हो गयी.

1975 में इमरजेंसी लगाने के बाद साल 1977 के चुनावों में इंदिरा गाँधी अपनी प्रचंड जीत को लेकर आस्वस्थ थी हालाँकि चुनाव नतीजे इसके उलट आये और कांग्रेस की चुनावी हार हुई, यहाँ तक कि इंदिरा गाँधी अपनी सीट तक नहीं बचा सकी.

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ये हक आपको किसने दिया?

कैलाश सत्यार्थी

आज हम जिस दुनिया में जी रहे हैं, वहां मानव शरीर के सूक्ष्मतम तत्व डीएनए में फेरबदल करके मनचाहा मनुष्य बनाने की तैयारियां हो रही हैं। पृथ्वी के विकल्प के रूप में मंगल ग्रह अथवा बीच-बीच में अंतरिक्ष स्टेशन बना कर मानव जाति को बसाने की कोशिशें भी शुरू हो चुकी हैं। गूगल और ऐपल चाय के प्यालों जैसी छोटी सी डिब्बेनुमा मशीनों को सूचनाओं के समुद्र से इस तरह जोड़ रहे हैं कि आप उनके सामने बैठ कर कोई भी सवाल पूछें तो वे सेकंड भर में जवाब पेश कर देती हैं। मैं इसी विकसित दुनिया में रहने वाले ऐसे करोड़ों बच्चों की बात कर रहा हूं, जो मानव जाति के लिए ईश्वर प्रदत्त सबसे बड़े उपहार आजादी तक से वंचित हैं।

चॉकलेट का स्वाद

कुछ वर्ष पहले मैं पश्चिमी अफ्रीका के देश आइवरी कोस्ट के एक गांव में बैठा था। वहां के करीब सभी बच्चे कोको बीन्स की खेती में गुलामों की तरह काम करते थे। उनके हाथ-पांव में घावों के निशान थे। इन्हीं कोको बीन्स से चॉकलेट पाउडर बनाया जाता है। मैंने कौतूहलवश पूछा कि उन्हें चॉकलेट का स्वाद कैसा लगता है? बच्चे एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। मेरे लिए यह आश्चर्यजनक था कि चॉकलेट जैसी किसी चीज को चखना तो दूर उन्होंने उसका नाम तक नहीं सुना था।

अभी दो दिन पहले हमने विश्व बाल श्रम विरोधी दिवस मनाया है। मजे की बात यह कि आज भी ऐसे प्रबुद्ध लोगों की कमी नहीं जो मानते हैं कि गरीबों के बच्चे मजदूरी नहीं करेंगे तो भूखे मर जाएंगे। मुझे उनकी बुनियादी नैतिकता पर तरस आता है। क्या कभी किसी बच्चे ने गरीबी पैदा की? अगर नहीं तो उसकी गरीबी को गुलामी में तब्दील करने का हक आप को किसने दिया? आज जब दुनिया में करीब 21 करोड़ वयस्क लोग बेरोजगार हैं तो 17 करोड़ बच्चों से मजदूरी कराने का क्या तर्क हो सकता है? सिर्फ यह कि वे सस्ते या मुफ्त के मजदूर हैं और उनके शोषण से अनैतिक काली कमाई करने वालों को आसानी रहती है।

हमारा सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक जीवन दोहरेपन पर टिका है। ईश्वर ने हमारे दिलों में करुणा जैसा अमृत दिया है। इसे बांटेंगे तो समुद्र की तरह यह फैलता चला जाएगा, और स्वार्थी बन कर पकड़े रहेंगे तो भाप की तरह तिरोहित हो जाएगा। आज करुणा को आंदोलन बनाने की, इसका भूमंडलीकरण करने की जरूरत है। ताकि जिस तरह हमने अपनी संतानों या छोटे-भाई बहनों में इस दुनिया को सिकोड़ लिया है, उससे बाहर निकल सकें। जब तक संसार के सभी बच्चे स्वतंत्र, सुरक्षित और शिक्षित नहीं हो जाते, तब तक यह दुनिया सुरक्षित और शांतिमय नहीं बन सकती। गुलामी की ईंटों से कभी भी विकास के स्थायी महल नहीं बन सकते।

दुनिया के इतिहास में करीब तीन करोड़ बच्चे अपना घर-बार और देश छोड़ कर दूसरों की शरण में जाने के लिए कभी भी अभिशप्त नहीं थे, लेकिन आज हैं। 23 करोड़ बच्चे खौफ, असुरक्षा और अनिश्चितता में जीते हुए युद्ध और हिंसा से ग्रस्त इलाकों में रहते हैं। इनमें बड़ी संख्या उन बेटियों की है, जिन्हें माता-पिता से छीन कर हवस के लिए गुलामी कराई जा रही है। लाखों बच्चों को बंधुआ और बाल मजदूरी में धकेला जा रहा है। कोई बताए कि इतिहास के किस दौर में बच्चे युद्ध की विभीषिका का कारण बने? कौन सा धर्म खदानों, खेत-खलिहानों, धधकती भट्टियों, वेश्यालयों में रोज मरते बच्चों के करुण क्रंदन को भुला कर आरतियों, अजानों और प्रार्थनाओं से ईश्वर को खुश करना सिखाता है?

मैं समस्याओं को हमेशा चुनौती की तरह लेता हूं और उनका समाधान ढूंढने में विश्वास करता हूं। इसी सोच ने मुझे एक बार फिर एक विश्वव्यापी युवा आंदोलन खड़ा करने के लिए प्रेरित किया। मैंने बाल मजदूरी को खत्म करने के लिए कई आंदोलन और जनजागरूकता अभियान चलाए हैं। बाल मजदूरी के खिलाफ मैं 1998 में ग्लोबल मार्च अगेंस्ट चाइल्ड लेबर नाम से दुनिया की सबसे लंबी यात्रा आयोजित कर चुका हूं। 80,000 किलोमीटर की यह यात्रा तब 103 देशों से होकर गुजरी थी और करीब डेढ़ करोड़ लोग इसमें शामिल हुए थे। इस यात्रा के जरिए ही पहली बार बाल मजदूरी और बाल दासता की तरफ विश्व समुदाय का ध्यान आकर्षित हुआ था।

आईएलओ कनवेंशन-182 और विश्व बाल श्रम विरोधी दिवस भी इसी यात्रा का परिणाम है। अब मैंने दुनिया भर के बच्चों को हिंसा और शोषण से मुक्त कराने के मकसद से भारत की धरती से 100 मिलियन फॉर 100 मिलियन नामक एक अभियान की शुरूआत की है। पांच साल तक चलने वाले इस आंदोलन से 10 करोड़ युवाओं को जोड़ा जाएगा जो दुनिया के 10 करोड़ वंचित बच्चों को शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए अभियान चलाएंगे। यह दुनिया का अपनी तरह का सबसे बड़ा युवा आंदोलन होगा। इसी अभियान के तहत मैं भारत में बाल यौन शोषण और बाल तस्करी के खिलाफ जन-जागरूकता फैलाने के लिए देशव्यापी ह्यभारत यात्राह्न का आयोजन कर रहा हूं।

तोड़ो बंधन तोड़ो

विश्व बाल श्रम विरोधी दिवस के अवसर पर मेरी आप सब से अपील है कि आप भी मेरे साथ इस यात्रा में शामिल हों और उन करोड़ों गुलाम बच्चों की सिसकियों को मुस्कराहट में बदलें जो मुक्ति के लिए झटपटा रहे हैं। उनकी बेड़ियां तोड़िए। मेरा दृढ़ विश्वास है कि गुलामी की बेड़ियां आजादी की चाहत से ज्यादा मजबूत नहीं होतीं। इसलिए जल्द ही वह दिन आएगा जब दुनिया से बाल मजदूरी और बाल दासता खत्म हो जाएगी। सभी बच्चे आजाद होंगे, खेलने के लिए, पढ़ने के लिए और सपने देखने के लिए भी।

(लेखक नोबेल शांति पुरस्कार विजेता और जाने-माने बाल अधिकार कार्यकर्ता हैं।)

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

होम लोन : कैसे, कितना और क्या जरुरी..?

लोन लेना आसान प्रोसेस लगेगा, लेकिन कुछ बातें हैं जो आपको होम लोन लेने से पहले ध्यान रखनी चाहिएं..

श्रुति दीक्षित

अगर जीएसटी, रेरा (रिएल एस्टेट रेग्युलेशन एक्ट) और एसबीआई और अन्य बैंकों के होम लोन इंट्रेस्ट रेट कम करने को देखा जाए तो साल 2017 घर खरीदने के लिए सबसे अच्छा साल हो सकता है. होम लोन लेना आसान प्रोसेस लगेगा, लेकिन कुछ बातें हैं जो आपको होम लोन लेने से पहले ध्यान रखनी चाहिएं..

एलिजिबिलिटी कैसी हो...

कई बार होम लोन एप्लिकेशन छोटी-छोटी बातों से रिजेक्ट हो जाती है. अधिकतर बार जो इंस्टॉलमेंट्स होती हैं वो यूजर के 40-50% सैलरी के बराबर होती है जिसमें बेसिक और डियरनेस अलावंस होता है. रीइम्बर्समेंट और बाकी अलावंस इसमें नहीं जोड़े जाते हैं. अब ऐसे में अगर आपके ऊपर कोई और लोन हो या फिर आपके ऊपर कई लोगों का खर्चा उठाने का भार हो तो भी आपको अपने हिसाब से लोन लेने में दिक्कत होगी.

ध्यान रखें इन बातों का

इसके अलावा, कम उम्र वालों को लोन मिलना आसान होता है. लोन प्रोसेस में कभी भी नौकरी से रिटायरेंट के बाद ईएमआई नहीं वसूली जा सकती है. ऐसे में जिन लोगों का रिटायरमेंट समय नजदीक है उन्हें तब तक लोन नहीं मिल सकता जब तक उनके साथ कोई कम उम्र का को-लोन ओनर ना हो.

लोन का टाइप...

दो तरह के होम लोन होते हैं एक जहां होम लोन इंट्रेस्ट रेट फिक्स होता है और एक फ्लोटिंग इंट्रेस्ट जहां इंट्रेस्ट रेट मार्केट रेट के हिसाब से बदल जाता है. आम तौर पर फिक्स रेट फ्लोटिंग रेट से 1-2.5 पर्सेंट प्वाइंट ज्यादा होता है. वैसे अधिकतर लोग फिक्स इंट्रेस्ट रेट लेते हैं, लेकिन अगर हालिया मार्केट स्थिती देखी जाए तो फ्लोटिंग इंट्रेस्ट से भी आपको काफी फायदा होगा. एटकका अमाउंट भी ऐसे में बदल सकता है.

प्रॉपर्टी...

आप कहां घर लेना चाहते हैं और कब तक उस प्रॉपर्टी पर रहेंगे आप या कोई प्रॉपर्टी कितनी पुरानी है ये भी मायने रखने वाली चीज है. अगर आप अपना घर खरीद रहे हैं और वो ऐसे एरिया में है जहां बैंक ज्यादातर लोन नहीं देते हैं तो आपके लिए ये एक निगेटिव प्वाइंट साबित हो सकता है.

प्रॉपर्टी की कीमत...

आपको लोन उसी हिसाब से मिलेगा जितनी प्रॉपर्टी की कीमत बैंक की तरफ से आंकी जाएगी. तो आपने अगर ज्यादा पैसा बैंक से लोन लेने की कोशिश की तो भी आपका लोन रिजेक्ट हो सकता है. अगर प्रॉपर्टी की कीमत बहुत ज्यादा है जैसे 75 लाख से ऊपर तो ही आपको 80 प्रतिशत तक कीमत लोन के तौर पर मिलेगी. अगर उससे कम है तो आपको 75% तक लोन मिलेगा.

क्रेडिट कार्ड...

अगर आपके पास क्रेडिट कार्ड है और उसका बिल चुकाने में आपको देर होती है तो ये लोन लेने के प्रोसेस में एक निगेटिव बात साबित हो सकती है. आपके क्रेडिट कार्ड का बिल काफी हद तक किसी भी तरह के लोन लेने में आड़े आ सकता है.

क्रेडिट स्कोर...

ज्यादातर बैंक आजकल सिबिल क्रेडिट स्कोर देखने लगे हैं. ऐसे में आपका स्कोर 750 से ऊपर होना चाहिए.

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

दीवाना बना दे

ट्राएंफ ने अपने तीन स्ट्रीट ट्रिपल वेरिएंट में से एक स्ट्रीट ट्रिपल एस को बाजार में लॉन्च कर दिया है। इसकी दिल्ली में एक्सशोरूम कीमत 8.50 लाख रुपये है। एस 2017 ट्रिपल एस का बेस वेरिएंट है। इसमें 765 सीसी वाला तीन सिलेंडर डीओएचसी लिक्विड कूल्ड इंजन लगा है। यह इंजन 113 एचपी की शक्ति 11250 आरपीएम और 73 एनएम का टॉर्क 9100 आरपीएम पर प्रदान करता है। एस में स्लिपर क्लच, राइड बाई वायर थ्रोटल दो राइडिंग मोड के साथ उपलब्ध है। एबीएसी और स्विचेबल ट्रैक्शन कंट्रोल, अपसाइड डाउन अलग से संचालित होने वाला फोर्क्स आगे व प्रीलोड अडजस्टेबल मोनोशॉक राउंड पीछे दिया गया है।

ट्राएंफ मोटरसाइकिल इंडिया के प्रमुख विमल सुंबली ने बताया कि इसके लाइनअप का 90 फीसदी हिस्सा सीकेडी करने का है। स्ट्रीट ट्रिपल आर और आरएस भी इस साल के अंत तक जब आएंगी तो वो भी सीकेडी के तहत यहां आएंगी।

स्ट्रीट ट्रिपल एस का सीधा मुकाबला कावासाकी जेड900 और डुकाटी मॉन्सटर 821 से है। जेड900 में इनलाइन फोर इंजन लगा है जो कि 125 एचपी की शक्ति जबकि मॉन्सटर 821 स्पोर्टस 112 एचपी की शक्ति देता है। हालांकि स्ट्रीट ट्रिपल एस इस लिहाज से अपनी अफोर्डेबल कीमत के साथ ज्यादा व्यावहारिक लगती है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

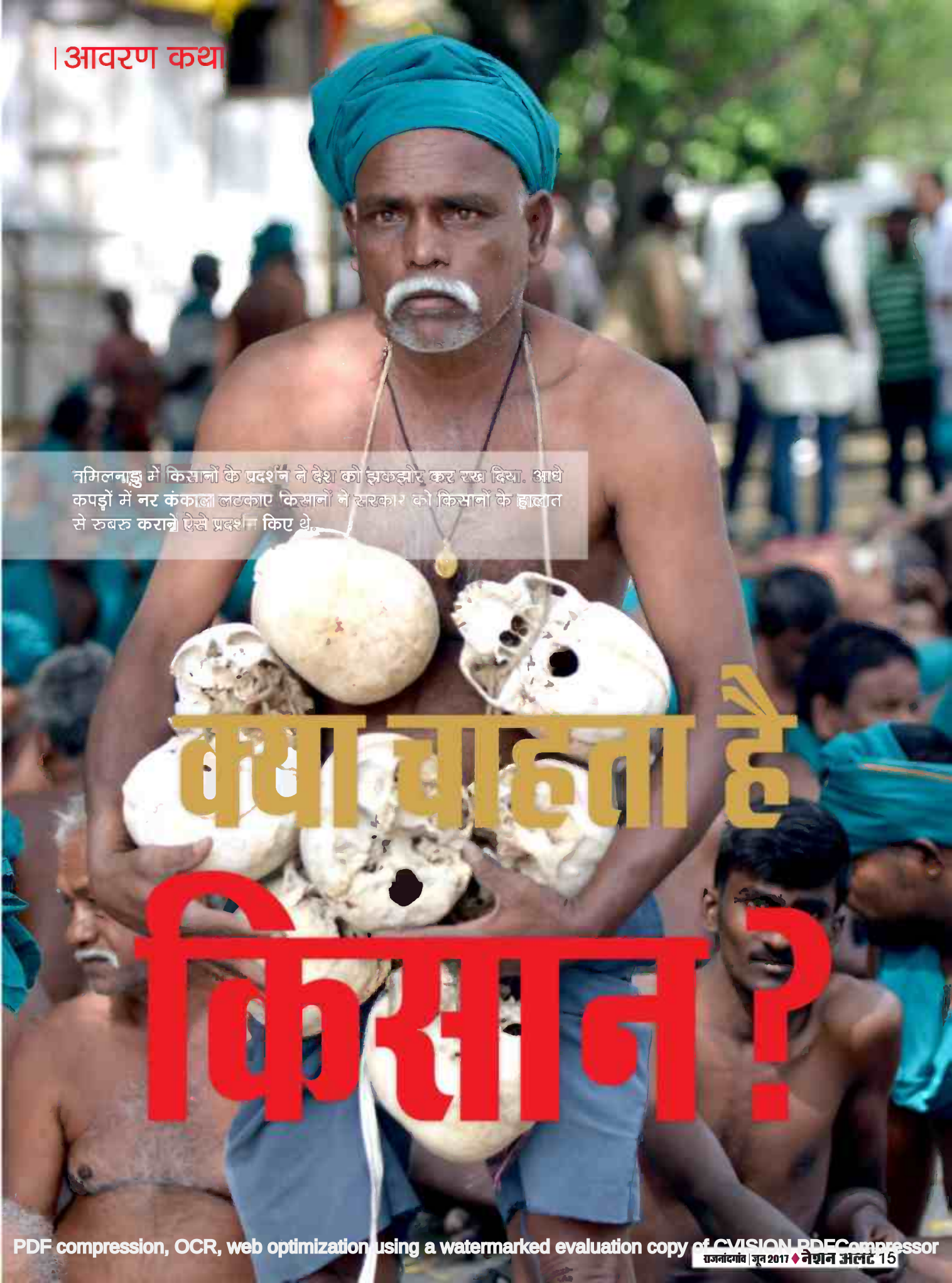

तमिलनाडु में किसानों के प्रदर्शन ने देश को झकझोर कर रख दिया. आधे कपड़ों में नर कंकाल लटकाए किसानों ने सरकार को किसानों के हालात से रुबरु कराने ऐसे प्रदर्शन किए थे.

क्या चाहता है किसान?

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

> राज्य के गृहमंत्री का दावा है कि सरकार ने किसानों पर गोली चलाने का आदेश नहीं दिया, पुलिस ने गोलियां नहीं चलाईं. उन्होंने कहा है कि गोलियां असामाजिक लोगों और षडयंत्रकारियों ने चलाईं.

गलत हुआ

प्रभुनाथ शुक्ल

मध्यप्रदेश के मंदसौर में किसानों के साथ जो कुछ हुआ उसे अच्छा नहीं कहा जा सकता. शिवराज सरकार अपनी जवाबदेही और जिम्मेदारियों से बच नहीं सकती. चलिए यह मान भी लिया जाए कि सरकार इसके लिए दोषी नहीं है फिर किसके आदेश पर गोलियां बरसाई गईं, जिसकी वजह से छह किसानों की मौत हो गई. लेकिन अब किसानों पर राजनीति की जा रही है.

मध्यप्रदेश की शिवराज सरकार और कांग्रेस इस पर खुली राजनीति कर रही है. राज्य की सत्ता से बाहर कांग्रेस इस मसले को हवा देकर जहां वापसी का रास्ता खोज रही है वहीं शिवराज सरकार किसी भी कीमत पर इसका लाभ कांग्रेस के हाथ नहीं जाने देना चाहती है. लेकिन सरकार के लिए यह आंदोलन बड़ी मुसीबत बन गया है. विपक्ष इस पर लामबंद होता दिख रहा है.

किसानों के गुस्से और आंदोलन की आग को कम करने के लिए सरकार ने मुआवजे को बढ़ा दिया है. सरकार ने पहले हादसे का शिकार हुए किसानों के लिए दो से दस लाख का मुआवजा घोषित किया, लेकिन बाद में इसकी राशि बढ़ा कर दस लाख से एक करोड़ कर दी गई. देश के मुवावजा इतिहास में शायद यह सबसे बड़ी राशि है. बावजूद अब यह आंदोलन पूरे राज्य में फैलता दिख रहा है.

आंदोलनकारी किसानों का गुस्सा इतना तीव्र था कि समझाने पहुंचे जिलाधिकारी को भी नहीं बख्शा गया, उनके कपड़े फाड़ दिए गए. हाईवे जाम करने के बाद कई वाहनों को आगे के हवाले कर दिया गया. थाने को भी आग लगाने की कोशिश की गई. पुलिस से कई जगह मंडियों और राजमार्ग पर हिंसक झड़प हुई. इस आंदोलन की वजह से करोड़ों रुपये की क्षति हुई है. राज्य की कानून-व्यवस्था की स्थिति बिगड़ गई है. मंदसौर और दूसरे जिलों में कफर्यू लगा दिया गया है. कई जिलों की टेलीफोन और इंटरनेट सेवाएं ठप कर दी गई हैं.

राज्य के गृहमंत्री का दावा है कि सरकार ने किसानों पर गोली चलाने का आदेश नहीं दिया, पुलिस ने गोलियां नहीं चलाई. उन्होंने कहा है कि गोलियां असामाजिक लोगों और षडयंत्रकारियों ने चलाईं. जिले की प्रभारी मंत्री अर्चना चिटनीस ने तो चार कदम और आगे बढ़ते हुए घटना को सियासी साजिश बताते हुए इसके पीछे मादक तस्करों और कांग्रेस का हाथ बता डाला. मुख्यमंत्री ने भी कहा है कि आंदोलन को उग्र और हिंसक बनाने में कांग्रेस की भूमिका रही है.

हम मानते हैं सरकार की बात में दम हो सकता था फिर मुख्यमंत्री और उनकी सरकार के मंत्रियों ने यह सब जानते हुए भी समय पर कार्रवाई क्यों नहीं की. केंद्र से लेकर राज्य सरकारें किसानों पर राजनीति करती आई हैं. कांग्रेस आज किसानों की सबसे हितैषी बन गयी है. राहुल गांधी किसानों पर खासे चिंचित दिखते हैं, लेकिन 60 सालों तक राज करने वाली कांग्रेस किसान और कृषि के लिए ठोस नीति क्यों नहीं तैयार कर पाई.

महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में किसानों की स्थिति बेहद बुरी है. आए दिन किसान आत्महत्या कर रहे हैं. लेकिन सरकारें किसानों की कर्जमाफी और उनकी बदहाली को चुनावी मसला बना कर सत्ता में आती हैं फिर उसपर राजनीति करती हैं. तमिलनाडु के किसान मार्च में 40 दिनों तक राजधानी दिल्ली में जंतर-मंतर पर अपनी मांगों को लेकर प्रदर्शन किया. सरकार का ध्यान अपनी तरफ

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

महाराष्ट्र में सिर्फ पांच माह में 852 किसान आत्महत्या कर चुके हैं. किसानों की आत्महत्या पर फड़नवीस सरकार के एक मंत्री के बयान पर बवाल मचा था. बाद में उन्होंने खुद खेत में हल चला खुद को किसान हितैषी साबित करने की कोशिश की. राज्य में किसान आंदोलन को देखते हुए सरकार ने किसानों की कर्जमाफी का एलान किया है.

खींचने के लिए नरमुंड के साथ जहां प्रदर्शन किया वहीं मूत्रपान भी किया. बाद में तमिलनाडु हाईकोर्ट ने सरकार को किसानों की कर्जमाफी का आदेश दिया. तमिलनाडु में एक साल के दौरान तकरीन 400 किसान खुदकुशी कर चुके हैं. राज्य के किसानों पर 7000 करोड़ का कर्ज है.

देश में 12,000 किसान प्रति वर्ष फसल की बाबार्दी, कर्ज की अधिकता, राजस्व वसूली और बैंकों के दबाव के कारण आत्महत्या को मजबूर होते हैं. देश में 1.2 करोड़ हेक्टेयर पर बोयी गयी गेहूं की फसल बर्बाद हो चली है. जिसकी कीमत तकरीबन 65,000 करोड़ रुपए है. 4.5 करोड़ किसान इस आपदा से प्रभावित हैं. कृषि के लिए ढ़ांचागत विकास न होने से किसानों की संख्या घट रही है. किसान अब मजबूर है. 2001 में किसानों की संख्या 12.73 करोड़ थी जबकि 2011 में यह घट कर 11 करोड़ 88 लाख पर पहुंच गयी.

देश में साल 2011 में 14027, 2012 में 13754 और 2013 में 11772 किसानों ने विभिन्न कराणों से आत्महत्या की. महाराष्ट्र में सत्ता की कमान संभालने वाली फड़नवीस सरकार में अब तक 852 किसान आत्महत्या कर चुके हैं. एक हेक्टेयर पर बोयी गयी गेहूं की फसल पर 90 हजार से अधिक की लागत लगती है. जिसमें सबसे अधिक खर्च 68 हजार रुपये श्रम पर आती है. लेकिन मुवावजे पर सरकरों की ओर से किसानों के साथ कितना भद्दा मजाक किया जा रहा है. उन्हें मुवावजे के नाम पर 62 और 72 रुपये के चेक दिए जा रहे हैं. वह भी बाउंस हो रहे हैं. सबसे अधिक कर्ज उत्तरप्रदेश के किसानों पर है.

पंजाब में दो महीने के अंदर 37 से अधिक किसान आत्महत्या कर चुके हैं. पंजाब में 2000 से 2010 के बीच 6,926 किसान आत्महत्या कर चुके हैं. इनमें से 3,954 किसान और 2,972 खेती से जुड़े मजदूर थे. पंजाब की अमरिंदर सरकार इस समस्या को लेकर खासी परेशान है और वह किसानों से आत्महत्या न करने की अपील कर चुकी है.

जबकि महाराष्ट्र में सिर्फ पांच माह में 852 किसान आत्महत्या कर चुके हैं. किसानों की आत्महत्या पर फड़नवीस सरकार के एक मंत्री के बयान पर बवाल मचा था. बाद में उन्होंने खुद खेत में हल चला खुद को किसान हितैषी साबित करने की कोशिश की. राज्य में किसान आंदोलन को देखते हुए सरकार ने किसानों की कर्जमाफी का एलान किया है.

किसानों की कर्जमाफी बड़ा मसला है. लेकन केंद्र की सरकारें हमेशा इससे बचती रहती हैं. हालांकि कांग्रेस ने 2008 में 60 हजार करोड़ का कर्जमाफ किया था, लेकिन केंद्र की मोदी सरकार इस मसले को कभी गंभीरता से नहीं लिया. वह हमेशा कर्जमाफी के बजाय किसानों को दूसरे रास्ते से लाभ पहुंचाने की बात करती रही है. लेकिन जमीनी सच्चाई है कि किसानों की हालत इतनी बुरी है कि उसे सरकार की नीतियों के बदौलत नहीं सुधारा जा सकता है. केंद्र सरकार इस बोझ को उठाने के लिए तैयार नहीं दिखती है. हालांकि केंद्र सरकार ने किसान क्रेडिटकार्ड की राशि को 8.50 लाख से बढ़ा कर 10 लाख करोड़ कर दिया है.

भारत की अर्थ व्यवस्था में कृषि और उसके उत्पादनों का बड़ा योगदान है. खाद्यान्न के मामले में अगर आज देश आत्मनिर्भर है तो यह अन्नदाताओं की कृपा है. उफ! लेकिन यह दर्दनाक तस्वीर हैं. बुंदेलखंड का किसान परिवार अनाज के अभाव में सूखे बेर और पापड़ बनी पूड़ियां खाने को मजबूर होता है. लेकिन खेती और किसानों पर सिर्फ और सिर्फ राजनीति होती है. सब कुछ धोखा, हर जगह छलावा. प्राकृतिक आपदा ने हमारी व्यवस्था को जमीन पर ला दिया है. सरकार और उसकी ब्यूरोक्रेसी कटघरे में है. किसानों की कर्जमाफी पर एक आयोग गठित कर राज्य और केंद्र सरकारों को मिलकर नीति बनानी चाहिए. समस्या का समाधान गोलियां नहीं नीतियां हैं. किसानों पर राजनीति बंद होनी चाहिए.

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

क्यों परेशान है देश का किसान ?

जहां एक तरफ किसान अपनी ऋण माफी को लेकर अड़े हुए हैं तो वहीं रिजर्व बैंक ने कहा है कि ऐसे कदम से वित्तीय घाटा और महंगाई में वृद्धि का खतरा बढ़ जाएगा.

अभिनव राजवंश

देश खाद्यान उत्पादन में नए-नए रिकॉर्ड बना रहा है, बावजूद इसके देश का किसान परेशान है. अभी कुछ ही दिनों पहले तक तमिलनाडु के किसान अपनी मांगों को लेकर तरह से तरह से प्रदर्शन कर रहे थे और अब देश के दो अन्य राज्य महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के किसान अपनी मांगों को लेकर सड़क पर हैं.

हालांकि जहां तमिलनाडु के किसान शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे थे तो वहीं महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के किसानों ने काफी उग्र प्रदर्शन करना शुरू कर दिया है. महाराष्ट्र में किसानों ने सब्जियां और दूध सड़क पर फेंककर विरोध प्रदर्शन किया तो मध्य प्रदेश के किसान काफी हिंसक तरीके से अपना विरोध दर्ज कराया, पुलिस की गोलीबारी में 5 किसानो की मौत ने तो परिस्तिथियों को और भी खराब कर दिया है. दूसरी तरफ इस आग की आंच एक बार फिर छत्तीसगढ़ तक पहुंच गई. मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने अपनी तीसरी पारी से पहले किसानों से जो वादा किया वो अब तक अधूरा है और किसानों की नारजगी का सबब भी यही है. तो आखिर वजह क्या है की भारत की सवा अरब जनता को अन्न उगाने वाला अन्नदाता इतना परेशान है ?

क्या है किसानो की मांग ?

कुल मिलाकर दोनों ही राज्यों के किसानों की मांग एक ही तरह की है, किसान जहां अपनी फसल के लिए उचित समर्थन मूल्य की मांग कर रहे हैं तो वहीं किसान कर्जमाफी के लिए भी सरकार पर दबाव बना रहे हैं. साथ ही किसान स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों को लागू किये जाने की भी मांग कर रहे हैं.

साल 2004 में डॉ. स्वामीनाथन की अध्यक्षता में बनी आयोग ने किसानों के बेहतरी के लिए कई सुझाव दिए थे, जिसमें फसल उत्पादन मूल्य से पचास प्रतिशत ज्यादा समर्थन मूल्य किसानों को देने की बात कही गयी है. इसके अलावा अन्य प्रमुख सुझावों में किसानों को अच्छी क्वालिटी के बीज कम दामों में मुहैया कराना, किसानों की मदद के लिए नॉलेज सेंटर और कृषि जोखिम फंड का बनाया जाने की भी सिफारिस आयोग ने की थी.

हालांकि सरकार के लिए असल मुसीबत किसानो की मांग के साथ ही रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की चेतावनी भी है. जहां एक तरफ किसान अपनी ऋण माफी को लेकर अड़े हुए हैं तो वहीं रिजर्व बैंक ने कहा है कि ऐसे कदम से वित्तीय घाटा और महंगाई में वृद्धि का खतरा बढ़ जाएगा. आरबीआई गर्वनर के अनुसार अगर बड़े पैमाने पर किसानों के ऋण माफ किए गए तो इससे वित्तीय घाटा बढ़ने का खतरा है और जब तक राज्यों के बजट में वित्तीय घाटा सहने की क्षमता नहीं आ जाती, तब तक किसानों के ऋण माफ करने से बचना चाहिए. मगर महाराष्ट्र के किसान यह मानते हैं कि अगर उत्तर प्रदेश के किसानों की कर्जमाफी कि जा सकती है तो वहां क्यों नहीं.

किसानों के विरोध के बाद दोनों ही राज्य के सरकारों ने किसानों की कई मांगे मान ली हैं और कई मांगों पर विचार भी किये जा रहे है, बहुत संभव है कि इन सबके बाद किसान भी अपने आंदोलन को समाप्त कर देंगे. मगर असल सवाल यह है कि आखिर क्यों देश के लिए बम्पर फसल उगाने के बावजूद देश के किसान हाशिये पर हैं ? और क्या किसानों कि कर्ज माफी ही किसानों की समस्या का स्थाई समाधान है ?

वैसे देखा जाय तो देश कि हर सरकार और राजनीतिक पार्टियां किसानों के हित की बात करते दिख जाते हैं, मगर सच्चाई यही है कि आज भी देश का आम किसान दो जून की रोटी से आगे नहीं सोच सकता, देश भर में किसानों की आत्महत्या बदस्तूर जारी है. तो ऐसे में जरुरत है कि देश का शासन उस दिशा में काम करे जिससे किसानों की स्थिति में स्थाई रूप से सुधार हो और देश के किसान को अपने गरीबी से परेशान हो आत्महत्या करने की जरुरत ना पड़े.

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पुरी में कृष्ण जगन्नाथ हो गए

हिन्दुओं की प्राचीन और पवित्र 7 नगरियों में पुरी उड़ीसा राज्य के समुद्री तट पर बसा है। जगन्नाथ मंदिर विष्णु के 8वें अवतार श्रीकृष्ण को समर्पित है। भारत के पूर्व में बंगाल की खाड़ी के पूर्वी छोर पर बसी पवित्र नगरी पुरी उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर से थोड़ी दूरी पर है। आज का उड़ीसा प्राचीनकाल में उत्कल प्रदेश के नाम से जाना जाता था। यहां देश की समृद्ध बंदरगाहें थीं, जहां जावा, सुमात्रा, इंडोनेशिया, थाईलैंड और अन्य कई देशों का इन्हीं बंदरगाह के रास्ते व्यापार होता था।

पुराणों में इसे धरती का वैकुंठ कहा गया है। यह भगवान विष्णु के चार धामों में से एक है। इसे श्रीक्षेत्र, श्रीपुरुषोत्तम क्षेत्र, शाक क्षेत्र, नीलांचल, नीलगिरि और श्री जगन्नाथ पुरी भी कहते हैं। यहां लक्ष्मीपति विष्णु ने तरह-तरह की लीलाएं की थीं। ब्रह्म और स्कंद पुराण के अनुसार यहां भगवान विष्णु पुरुषोत्तम नीलमाधव के रूप में अवतरित हुए और सबर जनजाति के परम पूज्य देवता बन गए। सबर जनजाति के देवता होने के कारण यहां भगवान जगन्नाथ का रूप कबीलाई देवताओं की तरह है। पहले कबीले के लोग अपने देवताओं की मूर्तियों को काष्ठ से बनाते थे। जगन्नाथ मंदिर में सबर जनजाति के पुजारियों के अलावा ब्राह्मण पुजारी भी हैं। ज्येष्ठ पूर्णिमा से आषाढ़ पूर्णिमा तक सबर जाति के दैतापति जगन्नाथजी की सारी रीतियां करते हैं।

पुराण के अनुसार नीलगिरि में पुरुषोत्तम हरि की पूजा की जाती है। पुरुषोत्तम हरि को यहां भगवान राम का रूप माना गया है। सबसे प्राचीन मत्स्य पुराण में लिखा है कि पुरुषोत्तम क्षेत्र की देवी विमला है और यहां उनकी पूजा होती है। रामायण के उत्तराखंड के अनुसार भगवान राम ने रावण के भाई विभीषण को अपने इक्ष्वाकु वंश के कुल देवता भगवान जगन्नाथ की आराधना करने को कहा। आज भी पुरी के श्री मंदिर में विभीषण वंदापना की परंपरा कायम है।

स्कंद पुराण में पुरी धाम का भौगोलिक वर्णन मिलता है। स्कंद पुराण के अनुसार पुरी एक दक्षिणवर्ती शंख की तरह है और यह 5 कोस यानी 16 किलोमीटर क्षेत्र में फैला है। माना जाता है कि इसका लगभग 2 कोस क्षेत्र बंगाल की खाड़ी में डूब चुका है। इसका उदर है समुद्र की सुनहरी रेत जिसे महोदधी का पवित्र जल धोता रहता है। सिर वाला क्षेत्र पश्चिम दिशा में है जिसकी रक्षा महादेव करते हैं। शंख के दूसरे घेरे में शिव का दूसरा रूप ब्रह्म कपाल मोचन विराजमान है। माना जाता है कि भगवान ब्रह्मा का एक सिर महादेव की हथेली से चिपक गया था और वह यहीं आकर गिरा था, तभी से यहां पर महादेव की ब्रह्म रूप में पूजा करते हैं। शंख के तीसरे वृत्त में मां विमला और नाभि स्थल में भगवान जगन्नाथ रथ सिंहासन पर विराजमान है।

मंदिर का इतिहास : इस मंदिर का सबसे पहला प्रमाण महाभारत के वनपर्व में मिलता है। कहा जाता है कि सबसे पहले सबर आदिवासी विश?ववसु ने नीलमाधव के रूप में इनकी पूजा की थी। आज भी पुरी के मंदिरों में कई सेवक हैं जिन्हें दैतापति के नाम से जाना जाता है।

राजा इंद्रद्युम्न ने बनवाया था यहां मंदिर : राजा इंद्रद्युम्न मालवा का राजा था जिनके पिता का नाम भारत और माता सुमति था। राजा इंद्रद्युम्न को सपने में हुए थे जगन्नाथ के दर्शन। कई ग्रंथों में राजा इंद्रद्युम्न और उनके यज्ञ के बारे में विस्तार से लिखा है। उन्होंने यहां कई विशाल यज्ञ किए और एक सरोवर बनवाया। एक रात भगवान विष्णु ने उनको सपने में दर्शन दिए और कहा नीलांचल पर्वत की एक गुफा में मेरी एक मूर्ति है उसे नीलमाधव कहते हैं। तुम एक मंदिर बनवाकर उसमें मेरी यह मूर्ति स्थापित कर दो। राजा ने अपने सेवकों को नीलांचल पर्वत की खोज में भेजा। उसमें से एक था ब्राह्मण विद्यापति। विद्यापति ने सुन रखा था कि सबर कबीले के लोग नीलमाधव की पूजा करते हैं और उन्होंने अपने देवता की इस मूर्ति को नीलांचल पर्वत की गुफा में छुपा रखा है। वह यह भी जानता था कि सबर कबीले का मुखिया विश्ववसु नीलमाधव का उपासक है और उसी ने मूर्ति को गुफा में छुपा रखा है। चतुर विद्यापति ने मुखिया की बेटी से विवाह कर लिया। आखिर में वह अपनी पत्नी के जरिए नीलमाधव की गुफा तक पहुंचने में सफल हो गया। उसने मूर्ति चुरा ली और राजा को लाकर दे दी। विश्ववसु अपने आराध्य देव की मूर्ति चोरी होने से बहुत दुखी हुआ। अपने भक्त के दुख से भगवान भी दुखी हो गए। भगवान गुफा में लौट गए, लेकिन साथ ही राज इंद्रद्युम्न से वादा किया कि वो एक दिन उनके पास जरूर लौटेंगे बशर्ते कि वो एक दिन उनके लिए विशाल मंदिर बनवा दे। राजा ने मंदिर बनवा दिया और भगवान विष्णु से मंदिर में विराजमान होने के लिए कहा। भगवान ने कहा कि तुम मेरी मूर्ति बनाने के लिए समुद्र में तैर रहा पेड़ का बड़ा टुकड़ा उठाकर लाओ, जो द्वारिका से समुद्र में तैरकर पुरी आ रहा है। राजा के सेवकों ने उस पेड़ के टुकड़े को तो ढूंढ लिया लेकिन सब लोग मिलकर भी उस पेड़ को नहीं उठा पाए। तब राजा को समझ आ गया कि नीलमाधव के अनन्य भक्त सबर कबीले के मुखिया विश्ववसु की ही सहायता लेना पड़ेगी। सब उस वक्त हैरान रह गए, जब विश्ववसु भारी-भरकम लकड़ी को उठाकर मंदिर तक ले आए।

अब बारी थी लकड़ी से भगवान की मूर्ति गढ़ने की। राजा के कारीगरों ने लाख कोशिश कर ली लेकिन कोई भी लकड़ी में एक छैनी तक भी नहीं लगा सका। तब तीनों लोक के कुशल कारीगर भगवान विश्वकर्मा एक बूढ़े व्यक्ति का रूप धरकर आए। उन्होंने राजा को कहा कि वे नीलमाधव की मूर्ति बना सकते हैं, लेकिन साथ ही उन्होंने अपनी शर्त भी रखी कि वे 21 दिन में मूर्ति बनाएंगे और अकेले में बनाएंगे। कोई उनको बनाते हुए नहीं देख सकता। उनकी शर्त मान ली गई। लोगों को आरी, छैनी, हथौड़ी की आवाजें आती रहीं। राजा इंद्रद्युम्न की रानी गुंडिचा अपने को रोक नहीं पाई। वह दरवाजे के पास गई तो उसे कोई आवाज सुनाई नहीं दी। वह घबरा गई। उसे लगा बूढ़ा कारीगर मर गया है। उसने राजा को इसकी सूचना दी। अंदर से कोई आवाज सुनाई नहीं दे रही थी तो राजा को भी ऐसा ही लगा। सभी शर्तों और चेतावनियों को दरकिनार करते हुए राजा ने कमरे का दरवाजा खोलने का आदेश दिया।

जैसे ही कमरा खोला गया तो बूढ़ा व्यक्ति गायब था और उसमें 3 अधूरी मूर्तियां मिली पड़ी मिलीं। भगवान नीलमाधव और उनके भाई के छोटे-छोटे हाथ बने थे, लेकिन उनकी टांगें नहीं, जबकि सुभद्रा के हाथ-पांव बनाए ही नहीं गए थे। राजा ने इसे भगवान की इच्छा मानकर इन्हीं अधूरी मूर्तियों को स्थापित कर दिया। तब से लेकर आज तक तीनों भाई बहन इसी रूप में विद्यमान हैं।

PDF_compression_OCR_web_optimization_using_a_watermarked_evaluation_copy_of_CVISION_PDFCompressor

हिट के लिए मेट..!

शाहरुख की दिलवाले की बात करें या फिर रईस की दोनों ही उनका पहले जैसा जलवा नहीं दिखा सकीं. अब उन्होंने एक बार फिर से रोमांस का हाथ थामा है और इसके लिए उन्होंने इम्तियाज अली का दामन पकड़ा है.

एक बार गेंदबाज अपनी लाइन और लेंथ खो बैठे तो उसका दोबारा लय में आना आसान नहीं होता. बल्लेबाज उसका वो हश्र करते हैं कि उसी हालत शेन वार्न जैसी हो जाती है जब सचिन तेंडुलकर ने उनकी गेंदबाजी के परखच्चे उड़ाए थे. ऐसा ही कुछ शाहरुख खान और इम्तियाज अली के बारे में भी कहा जा सकता है. दोनों की ही पिछली फि ल्में बॉक्स ऑफि स पर ठंडी रहीं और वे झुँझलाए गेंदबाज की तरह एक के बाद एक कुछ अटपटा कर रहे हैं.

जब हैरी मेट सेजल का टाइटल 80 के दशक की रोमांटिक फिल्म से मिलता जुलता है.

शाहरुख की दिलवाले की बात करें या फिर रईस की दोनों ही उनका पहले जैसा जलवा नहीं दिखा सकीं. अब उन्होंने एक बार फिर से रोमांस का हाथ थामा है और इसके लिए उन्होंने इम्तियाज अली का दामन पकड़ा है. लेकिन इम्तियाज अली अपनी पिछली फि ल्म तमाशा के जरिये अपना तमाशा बनवा चुके हैं. शायद वह अपनी फि ल्मों के कामयाबी के स्वाद को न चख पीने की वजह से थोड़े परेशान होंगे और इसीलिए वे कुछ ऐसा करने लगे हैं जो उनकी फि ल्मी फि तरत में नहीं है.

उनकी नई फि ल्म जब हैरी मेट सेजल का पोस्टर रिलीज हुआ है. पहली बात यह कि टाइटल हॉलीवुड फि ल्म व्हेन हैरी मेट सैली से प्रेरित है. हो सकता है इम्तियाज को लगता हो कि जब वी मेट उनकी हिट फि ल्म रही थी, इस तरह वे एक बार फिर उसी तरह का टाइटल लेकर अपनी कि स्मत चमका सकते हों. यह सब तो ठीक है क्योंकि हॉलीवुड पुराने समय से बॉलीवुड की प्रेरणा रहा है. लेकिन इम्तियाज और शाहरुख को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि उनकी पिछली फिल्में कमजोर कहानी की वजह से नहीं चली थीं, और उन्हें कहानी पर फोकस करना चाहिए. वैसे इम्तियाज फिल्म के टाइटल के लेकर काफी पशोपेश में थे और गहन शोध चल रहा था. लेकिन आखिर में खोदा पहाड़ और निकला चूहिया वाली बात ही सिद्ध हुई.

उम्मीद करते हैं कहानी में कुछ नया होगा क्योंकि जहाँ तक पहली झलक के रूप में पोस्टर का आना है तो कहानी के भी कहीं से उठाए होने की संभावना ज्यादा लग रही है. अगर ऐसा हुआ तो वह दिन दूर नहीं जब इम्तियाज और शाहरुख कहें कि जब वी हिट...

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जान से जानी दुश्मन?

सोनाक्षी कोहली

एक कहावत है कि पुरुष मंगल ग्रह से आए हैं और महिलाएं शुक्र ग्रह से, इन दोनों की इसी ट्यूनिंग में अंतर के कारण दो लोगों में टकराव की नौबत आ जाती है. कभी-कभी तो ये तनाव इतना ज्यादा हो जाता है कि दोनों को लगने लगता है कि रिलेशनशिप नाम के इस पचड़े को धरती से खत्म ही कर दिया जाना चाहिए.

शुरू-शुरू में तो सब कुछ अच्छा लगता है. दुनिया रंगीन नजर आती है. लेकिन जैसे ही ये लवली फेज खत्म होता है, एक नया ही पैटर्न दिखने लगता है: सो जाओ, उठो, फिर लड़ो, और यही नियम बन जाता है. अगर इतना सब होने के बावजूद भी दो लोग साथ रहने का फैसला करते हैं तो इसका मतलब है कि आप दोनों के बीच थोड़ा प्यार अभी बचा हुआ है. और इस रिश्ते को बचाए रखने के लिए फिर आपको जरुरत है तो सिर्फ थोड़ी सी समझदारी की.

चलिए हम आपको कुछ टिप्स दे दें-

लगातार इजहार

जब कोई पुरुष के मन में किसी महिला के लिए भावनाएं उत्पन्न होती हैं तो वो उसे अपना बेस्ट देने की कोशिश करता है. और ऐसा बिल्कुल नहीं है कि ये सब वो लड़की को इंप्रेस करने के लिए करता है बल्कि किसी लड़की को अपने लिए राजी कराना पुरूषों के प्राकृतिक प्रवृति का हिस्सा है. विशेषज्ञ बताते हैं कि किसी रिश्ते के शुरूआती दौर में इंसान के मन में खूब सारा एक्साइटमेंट होता है. दुनिया हसीन लगती है. चारों तरफ खुशियां दिखती हैं. और ये सब शरीर में विकसित हो रहे हैप्पीनेस हार्मोन सेरोटोनिन और एड्रेनलिन की वजह से होता है. तो रिलेशनशीप के शुरूआत में गिफ्ट, रोमांटिक डेट और फूलों के गुलदस्ते के पीछे का कारण आपको समझ आ गया ना?

दारू के नशे की तरह

हालांकि आप लोग इस उदाहरण को ज्यादा सीरियसली ना लें. लेकिन दुनिया का हर आशिक प्यार की तुलना नशे से करते हैं. आपको ये तो पता ही है कि व्हिसकी का असर कैसे धीरे-धीरे होता है और फिर एक अलग ही दुनिया में जाता है. ठीक उसी तरह से प्यार का चक्कर भी धीरे-धीरे इंसान के दिमाग पर हावी होती है और फिर पूरी तरह अपने घेरे में ले लेती है. रिलेशनशीप के शुरूआत में इंसान के मन में उत्साह होता है. और इसी उत्साह में पुरुष, महिला को अच्छे गिफ्ट और प्यार की बौछार करते रहते हैं. लेकिन एक बार जैसे ही दोनो पार्टनर सेट हो जाते हैं दोनों के बीच एक तरह का कंफर्टेबल जोन बन जाता है जिसकी वजह से फिर दोनों अपने नेचुरल व्यवहार में आ जाते हैं.

बुखार उतारना मुश्किल होता है

महिलाएं पुरुषों से ज्यादा भावुक होती हैं. यही कारण है कि पार्टनर के रोजाना 10 बार कॉल करने की आदत घटकर 1 या 2 कॉल में बदल जाए, अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए लंबी बातें जब सिर्फ आई लव यू में सिमट जाए तो इस अंतर को वो आसानी से फील कर लेती हैं. ऐसा सिर्फ इसलिए होता है क्योंकि रिलेशनशीप के स्टार्ट में पुरुषों का प्रारंभिक व्यवहार महिलाओं की एक्सपेक्टेशन को इतना बढ़ा देती है कि बाद में नॉर्मल व्यवहार को स्वीकार करना महिलाओं के लिए गले की हड्डी जैसा बन जाता है.

परिणाम? रोज रोज की किचकिच

माना जाता है कि बातचीत हर समस्या को सुलझाने का अचूक तरीका है. लेकिन असली बात तो ये है कि अगर आपने दोनों के बीच की समस्या के बारे में बात करने में आपको तकलीफ हो रही है तो एक मिनट के लिए रूकिए और सोचिए कि आखिर आप दोनों के बीच में दिक्कत का कारण क्या है. अपनी समस्याओं को बिना किसी तरह के शिकायती लहजे के प्यार से पार्टनर के सामने रखें ताकि उसे ये ना लगे कि वह आपको कभी खुश नहीं कर सकता.

हर समस्या का अंत है

हर समस्या का समाधान होता है और इसका भी होगा. बात बस इतनी सी है कि स्त्री और पुरुष दोनों के प्यार की भाषा और परिभाषा अलग-अलग होती है. रिलेशनशिप में होने वाले समय और एक-साथ रहने के समय में बहुत अंतर होता है. हर किसी को ये समझने की जरुरत है कि समय के साथ चीजें बदलती हैं और उसे हर किसी को स्वीकार करना पड़ता है. इसलिए थोड़ा शांत रहें और अपने साथी से उम्मीदों का पहाड़ ना खड़ा कर लें. किसी भी अच्छे संबंध में समझौता और साथ दोनों की अहम भूमिका होती है. अगर आपको लगता है कि आपके पार्टनर को एक चांस और मिलना चाहिए तो फिर जी-जान से और पूरे पॉजिटिव सोच के साथ ध्यान केंद्रित करें.

हैंगओवर उतारने का अचूक इलाज

आप दोनों की समझदारी और सच्चाई रिश्तों को संभालने में अहम भूमिका अदा करती है. लेकिन आप जानते हैं कि रिजेक्टेड, अनवांटेड फील करने से बचने का सबसे प्रभावी तरीका क्या है? खुद को खुद के साथ प्यार करना सीखाएं. खुद को किसी और की तारीफों के लिए ना बांधें. शिकायतों के द्वारा या फिर खुद को उससे अलग करके अपना ध्यान आकर्षित करने के तरीकों को अपनाने के बजाय अपनी जिंदगी को अपना केंद्र बनाएं.

इस तरह आप भावनात्मक रूप से स्वतंत्र और अपनी जरूरतों के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रहेंगी. साथ ही साथ आप अपने पार्टनर को थोड़ा स्पेस भी दे पाएंगी. दोनों ही के लिए ये फायदे का सौदा है.

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कोचिंग में क्या रखा है..!

हैदराबाद के गोपाल कृष्ण रोनांकी को पैसों की कमी के चलते कोचिंग सेंटर ने प्रवेश नहीं दिया था. यूपीएससी में तीसरी रैंक ला कर उन्होंने बता दिया कि सफलता किसी कोचिंग संसथान की मोहताज नहीं होती.

बिलाल एम जाफरी

व्यक्ति चाहें कैसा भी हो, उसका धर्म भले कोई भी हो ये बेहद जरूरी है कि वो अच्छा इंसान हो. किसी भी व्यक्ति के अच्छा बनने के कारणों पर नजर डालें तो मिलता है कि जहां एक तरफ घर का माहौल इसका जिम्मेदार है तो वहीं दूसरी तरफ शिक्षा भी इसका एक महत्वपूर्ण कारक है.

महंगाई के इस दौर में एक आम आदमी के लिए अपने बच्चों को पढ़ाना वाकई एक मुश्किल काम है. आदमी जितना कमाता है, उसका एक बड़ा हिस्सा वो बच्चों की स्कूल फीस उसके बाद किताब, कॉपियों में निकाल देता है. यहां तक बात ठीक थी, इसके बाद एक आम आदमी के लिए असल दिक्कत तब शुरू होती है जब उसे अपने खर्चों में कटौती करते हुए बच्चे को कोचिंग भेजना होता है.

कहा जा सकता है आज बच्चे को कोचिंग भेजना एक फैशन से ज्यादा एक सामाजिक जरूरत है. प्रायः ये देखा गया है कि प्रतियोगिता के इस दौर में हर किसी मां बाप का सपना होता है कि उनका बेटा या बेटी टॉपर बन उसका नाम रौशन करे. साथ ही ये भी देखा गया है कि अब खुद स्कूलों द्वारा मां बाप को ये बताया जाता है कि चूँकि उनका बच्चा पढाई में ठीक है और ये और भी अच्छा निकल सकता है यदि वो इसका प्रवेश किसी अच्छी कोचिंग में कराते हैं. आप 'अच्छे' कोचिंग सेंटर की फीस से वाकिफ होंगे. एक आम आदमी के लिए अपने बच्चों को अच्छी कोचिंग में भेजना कोई आसान काम नहीं है. अपन बच्चे को अच्छी कोचिंग में भेजने के लिए एक आम माँ बाप की कमर टूट जाती है, उनकी अर्थव्यवस्था बिगड़ जाती है.

अब उपरोक्त इंगित बातों को एक ऐसे माँ बाप या ऐसे परिवारों के सन्दर्भ में सोचिये जो गरीबी रेखा के नीचे रह कर जीवन यापन कर रहे हों. आपको मिलेगा कि इन हालात में एक गरीब माँ बाप अपन बच्चे को पढ़ा नहीं सकते हैं.

आगे बढ़ने से पहले हम आपको ऐसी ही एक खबर से रु-ब-रु कराएंगे जहाँ एक बच्चे को कोचिंग सेंटर ने सिर्फ इसलिए दाखिला नहीं दिया क्योंकि उसके परिवार के पास कोचिंग की भारी भरकम फीस चुकाने के पैसे नहीं थे. और ये सिर्फ लड़के की मेहनत और लगन ही थी जिसके चलते न सिर्फ उसने यूपीएससी की परीक्षा दी बल्कि यूपीएससी जैसी कठिन परीक्षा में तीसरी रैंक हासिल कर ये बता दिया कि सफलता संसाधनों की मोहताज नहीं होती और इसके लिए सिर्फ लगन और मेहनत की जरूरत होती है.

खबर हैदराबाद से है जहां 30 साल के गोपाल कृष्ण रोनांकी की जिद और उनके हौसलों के आगे चुनौतियों भी छोटी साबित हो गयीं. उन्होंने न सिर्फ सिविल सर्विस एग्जाम में सफलता हासिल की बल्कि पूरे भारत में तीसरी रैंक लेकर आये. बताया जा रहा है कि गोपाल पूरे आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में टॉप रैंक पर रहे. गोपाल की स्थिति का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि पैसे न होने के चलते कोचिंग ने इन्हें अपने सेंटर में प्रवेश देने तक से मना कर दिया था.

अंत में हम इतना ही कहेंगे कि ये बिल्कुल भी जरूरी नहीं कि हर बच्चा टॉपर हो महत्वपूर्ण ये है कि उसकी नींव मजबूत हो जो केवल स्वयं अध्ययन से ही होगी. साथ ही स्कूलों को भी ये बात भली प्रकार सोचनी चाहिए कि शिक्षा का बाजारीकरण न देश के हित में है और न ही समाज के हित में. स्कूल, अपने कैम्पस से टॉपर तो निकाल सकते हैं मगर ये बिल्कुल भी जरूरी नहीं कि वो टॉपर एक अच्छे इंसान हों और कुछ ऐसा कर सकें जिसके चलते समाज उन्हें याद रख सके.

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

एडम वेस्ट कौन थे?

एडम वेस्ट प्रसिद्ध बैटमैन टीवी सीरीज के अभिनेता थे ये विश्व के पहले थे, जिन्होंने बैटमैन का किरदार निभाया था. इन्हें कार्टून सुपर हीरो के रूप में जाना जाता था. वर्तमान में ये वॉइस ओवर आर्टिस्ट के तौर पर कार्य कर रहे थे. हाल ही में इनका निधन हो गया है.

हाल ही में वन डॉग पॉलिसी कहां पर लागू की गई है ?

वन डॉग पॉलिसी चीन में लागू की गई है. वन डॉग पॉलिसी लागू होने के बाद चीन में कोई भी व्यक्ति दो कुत्ते नही पाल सकता है. अगर कोई भी व्यक्ति ऐसा करता है तो उस पर करीब 19,500 रु. का जुमार्ना लगेगा. इसके अलावा जर्मन शेफर्ड समेत 40 प्रजाति के कुत्ते पालने पर पाबंदी लगा दी गई है.

हाल ही में दक्षिण अफ्रीका गणराज्य के लिए भारत की उच्चायुक्त के रूप में किसे नियुक्त किया गया है ?

दक्षिण अफ्रीका गणराज्य के लिए भारत की उच्चायुक्त के रूप में रुचिरा कंबोज को नियुक्त किया गया है. कंबोज 1987 बैच की भारतीय विदेश सेवा की अधिकारी है. कंबोज भारत सरकार के चीफ ऑफ प्रोटोकॉल पद पर पहुंचने वाली पहली महिला है. वर्तमान में कंबोज यूनेस्को पेरिस के लिए भारत की स्थायी प्रतिनिधि के पद पर कार्यरत है.

हाल ही में ब्रिटेन में पहली महिला सिख सांसद कौन बनी है ?

ब्रिटेन में पहली महिला सिख सांसद प्रीत गिल बनी है. गिल स्थानीय पार्षद के तौर पर काम कर चुकी हैं. बर्मिंघम ऐजबेस्टन की सीट पर हमेशा दर्शकों द्वारा महिला सांसद चुनी जाती हैं.

हाल ही में लीजन डी ऑनर पुरस्कार से किसे सम्मानित किया गया है ?

लीजन डी ऑनर पुरस्कार से अभिनेता सोमित्र चटर्जी को सम्मानित किया गया है. लीजन डी ऑनर पुरस्कार फ्रांस का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार है. इस पुरस्कार से सत्यजीत राय, पं. रविशंकर, अमिताभ बच्चन, शाहरुख खान और कमल हासन को सम्मानित किया जा चुका है. सोमित्र चटर्जी को दादा साहेब फाल्के, पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है.

हिस्ट्रोरिक फुटबॉल मैच कहाँ पर खेला जाता है ?

हिस्ट्रोरिक फुटबॉल इटली में खेला जाता है. इस खेल की शुरूआत 16वीं शताब्दी में हुई थी. हिस्ट्रोरिक फुटबॉल मैच प्रतिवर्ष जून में खेला जाता है. यह एक बेहद हिंसक फुटबॉल मैच होता है. इस खेल में दोनों टीमों में 27 खिलाडी होते है, जो रेट के मैदान पर 50 मिनट तक बिना रुके लगातार खेलते रहते है.

हाल ही में ड्रैगन बोट फेस्टिवल कहाँ पर आयोजित किया जाता है ?

ड्रैगन बोट फेस्टिवल कोलकाता में आयोजित की जा रही है ड्रैगन बोट फेस्टिवल चीन, दक्षिण कोरिया, हांगकांग और ताईवान में प्रतिवर्ष 30 मई को मनाया जाता है. जिसमें बोट रेस करवाई गई थी. यह उत्सव चीनी विद्वान कु युआन की याद में मनाया जाता है जिन्होंने तीसरी सदी में सरकार की नीतियों से तंग आकर नदी में कूदकर अपनी जान दे दी थी.

अन्तराष्ट्रीय एल्बिनिज्म (धवलता) दिवस कब मनाया जाता है ?

अन्तराष्ट्रीय एल्बिनिज्म (धवलता) दिवस प्रतिवर्ष 13 जून को मनाया जाता है. एल्बिनिज्म एक दुर्लभ और गैर संक्रामक, अनुवांशिक रूप से जन्म के समय मौजूद रहने वाला विकार है. इस बीमारी में पीड़ित व्यक्ति अधिकतर दृष्टहीन होते है तथा इन्हें त्वचा कैंसर होने का भी खतरा होता है यह दिवस धवलता के शिकार लोगों से विश्व में होने वाले भेदभाव के विरुद्ध जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से मनाया जाता है.

हाल ही में सेंट एंथोनी डे कहाँ पर बनाया जा रहा है ?

सेंट एंथोनी डे पुर्तगाल की राजधानी लिस्बनमें मनाया जा रहा है. यह दिन लिस्बनके संरक्षक संत सेंट एंथोनी की याद में मनाया जाता है. यह सेंट एंथोनी डे प्रतिवर्ष 13 जून को मनाया जाता है.

हाल ही में आइल ऑफ व्हाइट फेस्टिवल कहाँ पर मनाया जा रहा है ?

आइल ऑफ व्हाइट फेस्टिवल ब्रिटिश आइलैंड आइल ऑफ व्हाइट के शहर न्यूपोर्ट में मनाया जा रहा है. इस फेस्टिवल की शुरूआत 1968 में काउंटर-कल्चर इवेंट के रूप में हुई थी. वर्तमान में इस फेस्टिवल को म्यूजिक फेस्टिवल के रूप में मनाया जाता है इस फेस्टिवल में संगीत से जुड़े लोग बहुत अधिक संख्या में भाग लेते है.

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

है कश्मीर धरती पे जन्नत का मंजर

आलोक श्रीवास्तव

पहाड़ों के जिस्मों पे बर्फों की चादर
चिनारों के पत्तों पे शबनम के बिस्तर
हसीं वादियों में महकती है केसर
कहीं झिलमिलाते हैं झीलों के जेवर
है कश्मीर धरती पे जन्नत का मंजर

यहाँ के बशर हैं फरिश्तों की मूरत
यहाँ की जुबाँ है बड़ी खूबसूरत
यहां की फिजाँ में घुली है मुहब्बत
यहाँ की हवाएँ मुअत्तर-मुअत्तर
है कश्मीर धरती पे जन्नत का मंजर

ये झीलों के सीनों से लिपटे शिकारे
ये वादी में हँसते हुए फूल सारे
यकीनों से आगे हसीं ये नजारे
फरिश्ते उतर आए जैसे जमीं पर
है कश्मीर धरती पे जन्नत का मंजर

सुखन सूफि याना, हुनर का खजाना
अजानों से भजनों का रिश्ता पुराना
ये पीरों, फकीरों का है आशियाना
यहाँ सर झुकाती है कुदरत भी आकर
है कश्मीर धरती पे जन्नत का मंजर

मगर कुछ दिनों से परेशान है ये
सियासी-निगाहों से हैरान है ये
पहाड़ों में रहने लगी है उदासी
चिनारों के पत्तों में है बदहवासी
न केसर में केसर की खुशबू रही है
न झीलों में रौनक बची है जरा-सी
मगर दिल अभी भी यही कह रहा है-
है कश्मीर धरती पे जन्नत का मंजर ।

उजाला

अशोक तिवारी

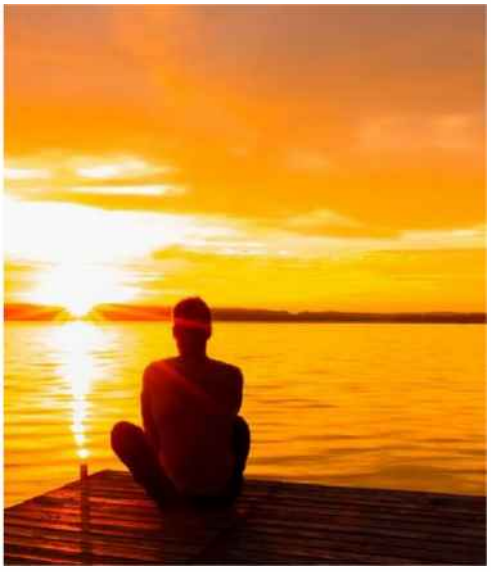

उजाला भरो अपने अंदर
कि अँधेरा दूर हो
अपनी नजरों से
और हम देख पाएं
बहुत सी अनचीन्ही चीजों को
उन्हें भी,
जो दिखाई तो देती हैं
मगर होती नहीं वैसी

समाने दो उजाले को अपने रेशे-रेशे में
कि अँधेरे की काली घुप चादर
फैला न सके मन में जहरीले अहसास
और दीवारों की बाड़
पैदा न कर सके खूबसूरत वादियों में
खूनी लडाई का जूनून

जमीन के उन टुकड़ों के सवाल पर
जो आपने पैदा ही नहीं किए
काँटों भरे रास्तों पर
बचाया जा सके इंसानियत को हर सिम्त
कि भरो उजाला अपने अंदर
इस कदर कि नजर न आएं सिर्फ.हम ही
देख पाएं दूसरों को
और पहचान पाएं अच्छे से

खोलो एक खिड़की अपने अंदर
उजाले के लिए
कि उजाला ही रहे उजाले के लिए
बना न दे रौशनी की भयंकर चकाचोंध
हमें कहीं अँधा...

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

नींद का सबसे बड़ा दुश्मन ?

27 साल की लता मेनन जब 8वीं क्लास में थीं, तो वह क्लास में ही ऊंघने लगतीं। पैरंट्स उसे जनरल फिजिशियन के पास ले गए जो समस्या की जड़ तक नहीं जा सका। मेनन बताती हैं, ज्यादातर डॉक्टर स्लीप स्पेशलिस्ट के बारे में नहीं जानते। स्लीप स्पेशलिस्ट ज्यादातर न्यूरॉलजिस्ट या पल्मोनॉलजिस्ट होते हैं।

चार साल पहले ही मेनन एक स्लीप स्पेशलिस्ट के पास गईं और उनका नॉक्टरनल स्लीप टेस्ट या पॉलीसोमनोग्राम करवाया गया। इसमें दिल की धड़कन, सांसें, आंखों का मूवमेंट और ब्रेन वेव्स रेकॉर्ड की जाती हैं। इसके बाद मल्टिपल स्लीप लेटेंसी टेस्ट किया गया जिसमें दिन के समय आने वाली नींद को ट्रैक किया जाता है। इन टेस्ट के बाद डॉक्टर ने बताया कि मेनन को नारकोलेप्सी है जो हाइपोक्रेटिन नाम के ब्रेन केमिकल की कमी से होता है। इसका इलाज सोने के समय को दुरुस्त करता है।

ह७ॉर्मोन और फोन का रिश्ता :

स्लीप स्पेशलिस्ट प्रीति देवनानी कहती हैं, स्लीप डिसऑर्डर्स का बड़ा कारण है- इलेक्ट्रॉनिक्स का इस्तेमाल। मोबाइल और लैपटॉप स्क्रीन से निकलने वाली नीली रोशनी नींद जगाने वाले हॉर्मोन मेलाटॉनिन का लेवल गिराती है। दिमाग के पीनियल ग्लैंड से मेलाटॉनिन निकलता है। यह दिन के समय बहुत कम होता है मगर आधी रात के समय यह अपनी चरम सीमा पर होता है। यह हॉर्मोन हमारे सोने-जागने के साइकिल को प्रभावित करता है।

इस बात का सीधा सा जवाब है कि जब मानसिक अथिति और दिमाग में चल रहे विचार आपस में मैल नहीं खाते, तभी यह परेशानी नजर आती है. चाहे वह बच्चा हो या बड़ा व्यक्ति.

रातभर जागने की आदत :

आकाश को टीनएज से ही रात में नींद नहीं आती थी। जब वह 23 साल के हुए उन्होंने इस बारे में डॉक्टर को दिखाया। आकाश बताते हैं, मैं रात में सोने की कोशिश करता मगर कुछ देर बाद मैं अपना फोन या लैपटॉप खोल लेता और सुबह होने तक उसी में लगा रहता। अब डॉक्टर ने उन्हें रात 10 बजे के बाद इलेक्ट्रॉनिक्स इस्तेमाल न करने की सलाह दी है।

देर से नींद आती है :

66 साल की देवनानी को नींद नहीं आती थी। वह फोन पर एक गेम की एडिक्टेड थीं और दिन में 16 घंटे तक उसे खेलती थीं। डॉक्टरों के मुताबिक, रात में स्क्रीन पर काम करने से डिलेड स्लीप फेज सिंड्रोम होता है। इससे परेशान व्यक्ति को रात में नींद कम आती है और वह देर से जागता है। यह युवाओं में ज्यादा होता है और इसका इलाज पेशंट के सोने का समय जल्दी करके, सुबह तेज रोशनी में रहकर सोने-जागने के साइकिल को दुरुस्त करके किया जाता है।

खर्राटे आते हैं, नींद टूटती है :

ऑब्सट्रक्टिव स्लीप एपनिया (ओएसए) आम समस्या है। इसमें गले के पीछे की मांसपेशियां नींद के दौरान ऊपरी सांस नली को दबाती हैं। इससे सांस में रुकावट आती है और बार-बार नींद टूटती है। इसलिए जिन्हें तेज खर्राटे आएं, उन्हें स्लीप एपनिया की जांच जरूर करवानी चाहिए। इसका इलाज कॉन्टिन्यूअस पॉजिटिव एयरवे प्रेशर (उढअढ) मशीन से किया जाता है। यह 25 हजार रुपये से लेकर 1.3 लाख रुपये तक में आती है।

हाथ-पैर हिलाते रहना :

कुछ लोगों को रेस्टलेस लेग्स सिंड्रोम (फ्छर) भी होता है जिसमें वे देर तक पैर को एक पोजिशन में नहीं रख पाते। इससे भी नींद टूटती रहती है। इस तरह की परेशानी वालों को दवाइयां दी जाती हैं और कैफीन या एल्कोहल से दूरी बनाने की सलाह दी जाती है।

अच्छी नींद चाहिए तो रोजाना एक्सरसाइज करें, सोच-समझकर ही खाएं, शाम 5 बजे के बाद न लेटें। रोजाना और वीकएंड पर भी सोने का रूटीन एक समान बनाए रखें। बिस्तर पर जाने से आधा घंटे पहले ही गैजेट को दूर कर लें। अच्छा होगा अगर आप उसे बेडरूम से बाहर ही रख दें।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

साइलेंट किलर..!

उच्च रक्तचाप अपने में एक ऐसी समस्या है, जो शायद इंसान के लिए कई बार जानलेवा भी साबित हो सकती है। छोटे बच्चे से लेकर बड़े तक इस समस्या की चपेट में हैं।

आज की भाग दौड़ वाली जिन्दगी में घर हो या बाहर, चिन्ता, परेशानी व गुस्सा हमारे दिल दिमाग व शरीर के दूसरे भागों को भी प्रभावित करता है। हमारा हृदय हमारे शरीर में रक्त को प्रवाहित करता है। स्वच्छ रक्त आर्टरी से शरीर के दूसरे भागों में जाता है और शरीर के दूसरे भागों से दूषित रक्त हृदय में वापस जाता है। ब्लड प्रेशर खून को पम्प करने की इसी प्रक्रिया को कहते हैं। ब्लड प्रेशर इसीलिए कोई बीमारी नहीं है बल्कि एक नार्मल प्रक्रिया है। लेकिन जब किसी कारणवश यह प्रेशर कम या ज्यादा होता है, तो इसे हाई ब्लड प्रेशर या लो ब्लड प्रेशर कहते हैं। आज लोगों में हाइपरटेंशन एक बहुत ही आम समस्या है। यह बिना किसी चेतावनी के होती है इसलिए इसे साइलेंट किलर कहते है।

पड़ता है बुरा प्रभाव

हाइपरटेंशन होने के दो कारण होते हैं। एक शारीरिक गतिविधि और दूसरी मानसिक गतिविधि। लेकिन क्या आप जानते हैं कि हाइपरटेंशन जब होता है, तो वह सबसे पहले आपके हार्ट पर असर डालता है। साथ ही यह आखों, दिमाग और किडनी को भी नुकसान पहुंचाता है। ग्लोबल हॉस्पिटल के डॉ. अनिल शर्मा, चीफ कार्डियोलॉजिस्ट का कहना है कि हाइपरटेंशन के दौरान हमारे शरीर की आर्टरीज को सही तरह से खून का सप्लाई नहीं हो पाता है, जिसकी वजह से स्ट्रोक होने का खतरा हो सकता है। अगर दिमाग की बात करें, तो हाइपरटेंशन की समस्या से हमें लक्वा मार सकता है। ऐसा तब होता है, जब आपकी आर्टरीज गल जाती हैं और ब्लड क्लॉट की वजह से खून का सप्लाई नहीं हो पाता है। इसे एम्बॉलिक स्ट्रोक के नाम से भी जाना जाता है। दूसरा अगर आपका ब्लड प्रेशर 200-250 के ऊपर जाता है, तो आपको ब्रेन हैमरेज होने का खतरा भी पढ़ जाता है।

डॉक्टर अनिल आगे कहते हैं कि हाइपरटेंशन में आंखों का रेटिना गलने लगता है, जिसकी वजह से लोगों को दिखाई देना बंद हो जाता है। इस समस्या को कहते हैं रेटिनोपैथी। वहीं, हाइपरटेंशन से किडनी में नेफ्रोपैथी की समस्या होने लगती है। हार्ट की अगर बात करें, तो हाइपरटेंशन में सबसे बुरा प्रभाव दिल पर पड़ता है। इस दौरान आपका हार्ट रिलेक्स नहीं हो पाता है और कोरोनरी आर्टरीज में कोलेस्ट्रोल जमने के कारण हार्ट अटैक आने की संभावना बढ़ जाती है।

डॉ. अनिल कहते हैं कि हाइपरटेंशन एक ऐसी समस्या हो, जो खासकर हमारी बॉडी के चार मुख्य हिसों पर हमला करती है। डब्ल्यूएसओ के अनुसार हर तीसरे युवा को यह समस्या है। 90 प्रतिशत यह एक साइलेंट किलर बीमारी के नाम से जानी जाती है। केवल 10 प्रतिशत ऐसा होता है, जब व्यक्ति को इसका पता चल पता है। अगर किसी को सिर दर्द भी होता है, तो उससे विशेषज्ञ की सलाह जरूर लेनी चाहिए।

कौन-से आहार हैं बेस्ट

हाइपरटेंशन के होने के समय कई ऐसे आहार होते हैं, जिन्हें आप अपनी डाइट में शामिल कर सकते हैं, जैसे हरी सब्जियां, सलाद आदि। इसके अलावा व्यक्ति को खुद को खुश और रिलेक्स करने के लिए मेडिटेशन भी जरूर करना चाहिए। इसके अलावा आधे घंटे की एक्सरसाइज भी व्यक्ति को अपनी लाइफ में शामिल करनी चाहिए। ध्यान रहे इसमें वेट लिफटिंग आदि शामिल नहीं है। वहीं, दूसरी ओर लोगों को नमक, चीनी, मिठाई, तेल आचार, जंक फूड, कोल्ड ड्रिंक आदि सो दूरी बनानी चाहिए।

PDF Compression, OCR, Web Optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

डबल्स के हीरो सिंगल में जीरो

फ्रेंच ओपन के मिक्स्ड डबल्स में भारत ने फिर अपना परचम लहरा दिया है. लेकिन टेनिस के सिंगल्स मुकाबलों में हम पीछे क्यों रह जाते हैं?

पवन वर्मा

भारत के रोहन बोपन्ना और कनाडा की गैब्रिएला डाब्रोवस्की की जोड़ी ने प्रतिष्ठित फ्रेंच ओपन टूर्नामेंट के मिक्स्ड डबल्स वर्ग का खिताब अपने नाम कर लिया है. फाइनल में उन्होंने कोलंबिया के राबर्ट फारा और जर्मनी की लीना ग्रोएनेफील्ड की जोड़ी को 2-6, 6-2, 12-10 से शिकस्त दी. बोपन्ना दूसरी बार किसी ग्रैंडस्लैम के फाइनल में पहुंचे थे. 2010 में उन्होंने पाकिस्तान के ऐसाम उल हक कुरैशी के साथ अमेरिकी ओपन पुरूष युगल फाइनल में जगह बनाई थी जहां उन्हें ब्रायन बंधुओं (बाब और माइक ब्रायन) की मशहूर जोड़ी ने हराया था. इस जीत के साथ रोहन बोपन्ना ग्रैंड स्लैम खिताब जीतने वाले लिएंडर पेस, महेश भूपति और सानिया मिर्जा जैसे खिलाड़ियों की सूची में शामिल हो चुके हैं.

लेकिन ऐसा क्यों है कि एक तरफ डबल्स में भारतीय खिलाड़ी असाधारण प्रदर्शन करते हैं वहीं सिंगल्स मुकाबलों में उनका प्रदर्शन औसत से आगे नहीं बढ़ पाता? सानिया मिर्जा डबल्स में छह ग्रैंडस्लैम खिताब जीत चुकी हैं. 2015 में 42 की उम्र में अपना 17वां ग्रैंडस्लैम टाइटल जीतने वाले पेस इस स्तर का खिताब जीतने वाले सबसे उम्रदराज खिलाड़ी बन चुके हैं.

डबल्स में भारतीय खिलाड़ी बीते कुछ समय से लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं. लेकिन जहां सिंगल्स मुकाबलों की बात आती है तो उनकी उपलब्धियां कहीं छोटी नजर आती हैं. सिंगल्स में सानिया मिर्जा कभी 27वीं रैंकिंग से आगे नहीं बढ़ पाईं. कुछ ऐसा ही मामला लिएंडर पेस का भी है जिन्होंने डबल्स और मिक्स्ड डबल्स को मिलाकर 18 ग्रैंड स्लैम खिताब जीते हैं. वे न सिर्फ 40 साल के पार वाली उम्र में ग्रैंडस्लैम जीतने वाले दुनिया के एकमात्र खिलाड़ी हैं बल्कि 100 से ज्यादा जोड़ीदार बनाकर डबल्स मुकाबले खेलने का विश्व रिकॉर्ड भी उनके ही नाम है. पेस 1999 में डबल्स की शीर्ष रैंकिंग पर रह चुके हैं लेकिन सिंगल्स रैंकिंग में वे भी अधिकतम 73वें स्थान तक ही पहुंच सके.

इस बात में कोई दो राय नहीं कि इन दोनों खिलाड़ियों ने भारतीय टेनिस के नाम कई उपलब्धियां दर्ज करवाई हैं. लेकिन एक अलग नजर से देखें तो इनका प्रदर्शन कुछ सवाल भी पैदा करता है. जैसे कि क्या हमारे खिलाड़ियों में सिंगल्स जीतने का दमखम नहीं है इसलिए हमने डबल्स मुकाबलों को अपनी ताकत बना लिया? या फिर डबल्स मुकाबलों को जीतने के लिए एक अलग काबिलियत की जरूरत है जो हमारे खिलाड़ियों में है?

इन दोनों सवालों का सबसे सही जवाब क्या है इसको समझने में भारतीय टेनिस का इतिहास हमारी काफी मदद कर सकता है. इस इतिहास को उन तीन खिलाड़ियों के करियर से समझा जा सकता है जिन्होंने अलग-अलग कालखंड में भारतीय टेनिस का प्रतिनिधित्व किया. इनमें सबसे पहला नाम है रामनाथन कृष्णन का. कृष्णन 1960 और 70 के दशक टेनिस खेला करते थे. उन्हें एक तरह से भारत का सर्वकालिक महान टेनिस खिलाड़ी कहा जा सकता है. 1960-61 में वे सिंगल्स की छठवीं रैंकिंग रखते थे और दहाई के नीचे रैंकिंग पाने वाले वे भारत के अब तक अकेले खिलाड़ी हैं. कृष्णन के पिता खुद टेनिस खिलाड़ी थे और उनकी देखरेख में ही कृष्णन ने टेनिस खेलना शुरू किया था.

कृष्णन 1954 में विंबलडन का जूनियर खिताब जीतने वाले एशिया के पहले टेनिस खिलाड़ी बने. बाद के सालों में उन्होंने अपने सभी समकालीन श्रेष्ठ खिलाड़ियों को हराया. 1961 में वे विंबलडन के सेमीफाइनल तक पहुंचे. 1962 में वे चौथी सीड (टूर्नामेंट में खेल रहे खिलाड़ियों की वरीयता) के

साथ विंबलडन में शामिल हुए थे लेकिन चोटिल हो जाने के कारण उन्हें इससे हटना पड़ा. डेविस कप में कृष्णन ने 50 सिंगल्स मैच जीते हैं. यह कारनामा अब तक कोई भारतीय खिलाड़ी नहीं कर पाया है. इन्हीं वजहों से उन्हें टेनिस के सिंगल्स मुकाबलों में आज भी भारत का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी माना जाता है.

कृष्णन के बाद विजय अमृतराज का दौर आया और एक हद तक उन्होंने अपने पूर्ववर्ती की विरासत को संभाला. अमृतराज ने भी अपने समकालीन कई श्रेष्ठ खिलाड़ियों को हराया, लेकिन वे इसमें उतने सफल साबित नहीं हुए जितने कृष्णन थे. सिंगल्स मुकाबलों में उनकी सबसे अच्छी रैंकिंग 16 रही. अमृतराज के बारे में कहा जाता है कि वे पांच सेट वाले मैचों में शुरूआत तो पूरी दमखम के साथ करते थे लेकिन मैच लंबा खिंचने पर उनके ऊपर थकान हावी हो जाती थी और वे हार जाते थे. शायद यही एक वजह थी कि वे बाद में अपने भाई आनंद के साथ डबल्स मुकाबले खेलने लगे. अमृतराज बंधुओं की इस जोड़ी ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खूब नाम कमाया.

लिएंडर पेस को अमृतराज का उत्तराधिकारी कहा जा सकता है. उनका करियर भी कमोबेश उसी रास्ते पर चला. सिंगल्स मुकाबलों में वे भी एक बार शीर्ष वरीयता प्राप्त पीट सैंप्रास को हरा चुके हैं और गाहे-बगाहे अपने से कहीं ऊंची रैंकिंग वाले कुछ और खिलाड़ियों को भी. लेकिन उनके खेल करियर का शीर्ष बिंदु डबल्स मुकाबलों में ही आया और आज 43 साल की उम्र में भी उन्हें डबल्स में दुनिया के सबसे अच्छे खिलाड़ियों में माना जाता है.

भारत में टेनिस के इन तीनों प्रतिनिधि खिलाड़ियों का करियर देखें तो इनमें एक विशेष क्रम नजर आता है. कृष्णन विशुद्ध रूप से सिंगल्स के खिलाड़ी थे तो अमृतराज ने दोनों विधाओं में अपने हाथ आजमाए और कुछ उपलब्धियां अर्जित कीं. वहीं लिएंडर पेस के नाम डबल्स मुकाबलों में ही सबसे ज्यादा उपलब्धियां हैं. यानी बाद के सालों में भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन डबल्स मुकाबलों में सुधरता गया और सिंगल्स में उनकी रैंकिंग बढ़ती गई. इस क्रम में हम इस समय टेनिस खेल रहे यूकी भांबरी और रोहन बोपन्ना जैसे खिलाड़ियों को भी रख सकते हैं. भांबरी और बोपन्ना भी इस समय अपना सारा ध्यान डबल्स मुकाबलों में लगा रहे हैं.

यह बड़ी विचित्र बात है कि टेनिस की जिस विधा में भारत को सबसे शुरूआती उपलब्धियां मिलीं उसी में वह अब फिसड्डी साबित हो रहा है. यदि हम कृष्णन की तुलना बाकी खिलाड़ियों से करें तो इनमें एक अंतर हमें साफ नजर आता है. इस दक्षिण भारतीय खिलाड़ी के पिता भी टेनिस खिलाड़ी थे और कृष्णन को उन्होंने खुद प्रशिक्षण दिया था. कृष्णन सिंगल्स मुकाबले खेलते हुए बड़े हुए. यह बात उन्हें देश के बाकी खिलाड़ियों से अलग करती है और शायद इसी में इस सवाल का आंशिक जवाब भी छिपा है कि क्यों हमारे यहां अब सिंगल्स के अच्छे खिलाड़ी नहीं हैं.

कृष्णन के पिता ने उनके लिए अपने घर के पास ही एक टेनिस कोर्ट बनवाया था. ऐसी सुविधा देश में हर एक टेनिस खिलाड़ी को नहीं मिल सकती. कहने को इस समय भारत में कई टेनिस कोर्ट हैं लेकिन स्तरीय कोर्ट गिने-चुने क्लबों में हैं. इतनी कम संख्या होने की वजह से हमारे खिलाड़ियों के टेनिस खेलने और सीखने की शुरूआत ही डबल्स मुकाबलों से होती है. लंबे समय तक वे सिंगल्स मुकाबलों की प्रैक्टिस ही नहीं कर पाते. बड़े शहरों में जहां ऐसे कोर्ट हैं वहां टेनिस में रुचि रखने वाले बच्चों को प्रैक्टिस के लिए प्रति घंटे छह सौ से लेकर छह हजार रुपये तक खर्च करने पड़ते हैं. यह कीमत शहर, कोर्ट और कोच के ऊपर निर्भर करती है. जाहिर है कि दूसरे खेलों के मुकाबले टेनिस भारतीयों के लिए काफी खर्चीला है और यह भी एक वजह है कि खिलाड़ियों को सिंगल्स मैचों की प्रैक्टिस के लिए काफी कम समय मिलता है.

डबल्स मुकाबलों से टेनिस का प्रशिक्षण लेने का मतलब है कि खिलाड़ी कोर्ट में किसी एक तरफ ज्यादा मजबूती से खेलेगा और दूसरी तरफ वह कमजोर होगा. मान लिया जाए कोई खिलाड़ी दाएं हाथ से खेलता है तो इसकी ज्यादा संभावना होगी कि वह फोरहैंड यानी दाईं तरफ से शॉट मारने में ज्यादा मजबूत हो लेकिन उसका बैकहैंड कमजोर हो सकता है. सिंगल्स मुकाबलों में आपको लगातार फोरहैंड और बैकहैंड शॉट खेलने पड़ते हैं. जाहिर है ऐसे में वे खिलाड़ी ज्यादा आगे जाएंगे जिनकी सिंगल्स मैच की प्रैक्टिस ज्यादा है. सानिया मिर्जा के खेल में भी यह देखा जा सकता है कि वे बैकहैंड शॉट में विरोधियों के सामने पस्त हो जाती हैं.

एथलेटिक्स की सभी प्रतियोगिताओं में माना जाता है कि टेनिस के सिंगल्स मुकाबले में सबसे ज्यादा स्टेमिना की जरूरत पड़ती है. यह खिलाड़ियों में धीरे-धीरे ही विकसित होता है. शुरूआत में एक लंबे अरसे तक डबल्स मैच खेलने से हमारे खिलाड़ियों में वह स्टेमिना नहीं आ पाता. प्रशिक्षण के स्तर पर यह खामी देश में सिंगल्स के चैंपियन खिलाड़ी पैदा करने में सबसे बड़ी बाधा तो है, लेकिन इसका फायदा भी हमारे खिलाड़ियों को डबल्स मुकाबलों मिलता है.

दो साल पहले अमेरिका की टेनिस खिलाड़ी वीनस विलियम्स भारत आईं थीं. वे अपनी बहन सेरेना के साथ जोड़ी बनाकर 14 ग्रैंड स्लैम खिताब जीत चुकी हैं. अपनी यात्रा के दौरान डबल्स मैचों पर बात करते हुए उनका कहना था कि इनके लिए सबसे महत्वपूर्ण है कि आप अपने पार्टनर को कितने जल्दी समझते हैं और उसे कितना सम्मान देते हैं. भारतीय खिलाड़ी इस मामले में अव्वल माने जा सकते हैं क्योंकि यह उनके प्रशिक्षण का अनिवार्य हिस्सा रहता है.

बेशक भारतीय खिलाड़ी डबल्स में ज्यादा अच्छा प्रदर्शन करते हैं लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि उनके सिंगल्स का प्रदर्शन बिल्कुल ही लचर हो. लिएंडर पेस, महेश भूपति और सानिया मिर्जा से लेकर सोमदेव देवबर्मन और रोहन बोपन्ना तक ने सिंगल्स मुकाबलों में अपने से ऊंची वरीयता प्राप्त खिलाड़ियों को हराया है. हालांकि वे अपने प्रदर्शन में निरंतरता नहीं रख पाए फिर भी उन्होंने इस मिथक को तोड़ा है कि भारतीय खिलाड़ियों की फिटनेस में कोई बुनियादी कमी होती है. यानी इस समय भले ही हम सिर्फ डबल्स के चैंपियन पैदा कर रहे हों लेकिन भविष्य में टेनिस प्रशिक्षण की सुविधाएं बढ़ने के साथ-साथ किसी भारतीय के सिंगल्स मुकाबलों में ग्रैंड स्लैम चैंपियन बनने की उम्मीद लगाई जा सकती है.

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जिंदगी में वास्तु से जुड़ी सलाह और संकेत

जीवन में उतार चढ़ाव आते रहते है, लेकिन जब भी जिंदगी में बुरा दौर शुरू होता है तो इंसान भगवान की शरण में जाता है। यही नहीं बुरे दौर के निकलने के लिए हर तरह के उपायों को भी करता है। कुछ उपाय काम कर जाते हैं तो कई उपायों से निराशा हाथ लगती है, लेकिन क्या आप जानते है कि आपके घर में मौजूद कपूर आपकी बड़ी से बड़ी समस्या को सुलझा सकती है। समस्या ही नहीं कपूर के ये उपाय करने से आपको कभी भी आर्थिक तंगी से जूझना नहीं पड़ेगा। जानिए कैसे एक कपूर का टुकड़ा आपकी बड़ी समस्या को हल कर सकता है।

- यदि आप धन की कमी से गुजर रहे हैं तो आपको कुछ दिनों तक घर में चांदी की कटोरी में कपूर के साथ लौंग को जलाना चाहिए।
- शनिवार को कपूर के तेल की बूंदों को पानी में डालकर स्नान करने से बीमारियां कोसो दूर रहती है।
- घर में धन की कमी के अलावा भी अशांति, नकारात्मकता आदि चीजें फैली हुई हैं तो इसमें कपूर आपकी काफी मदद कर सकता है। कूपर को घी में भिगाकर रोज सुबह शाम इसे जलाएं। इससे घर में नकारात्मक शक्तियां कम होगी और धीरे धीरे सकारात्मकता आने लगेगी।
- घर में वास्तुदोष है तो भी घर के सदस्यों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। अगर आपको भी लगता है कि आपके घर में वास्तुदोष है तो आपको घर में कपूर की दो गोलियां रखनी चाहिए और जैसे ही ये गल जाएं, इसकी जगह पर दूसरी गोलियां रख दें। समय समय पर कपूर घर में रखते रहें।
- घर में किसी सदस्य के विवाह में अगर कोई परेशानी आ रही है तो कूपर के छह टुकड़े और 36 लौंग को चावल और हल्दी में मिला दें। इसके बाद मां दुर्गा को इससे आहुति दें।

उपाय

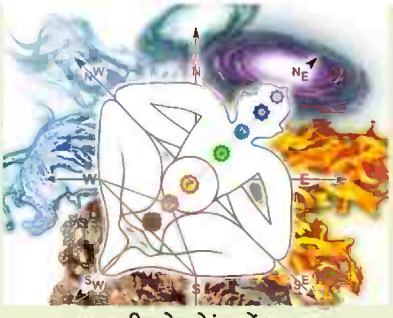

- शनिवार को पीपल का पत्ता तोड़कर उसके ऊपर हल्दी और दही लगाकर अपने पर्स में रखें और प्रत्येक शनिवार को यही प्रक्रिया दोहराए फिर आपका पर्स पैसे से कभी खाली नही रहेगा।
- काली मिर्च के पांच दानें लें और उसे सात बार अपने सिर पर से घुमाएं। इन पांच दानों में से चार दाने तो आप चार दिशाओं में फेंक दें और आखिरी पाचवां दाना आकाश की ओर फेंक दें।
- घर के आस पास किसी श्मशान में जाकर वहां स्थित शिव मंदिर में दूध और शहद चढ़ाएं। ऐसा करने से अचानक धन मिलेगा।
- हमेशा आप अपनी तिजोरी में एक लाल कपड़ा जरूर रखें।
- घर में रोज श्रीसूक्त का पाठ करना करें, क्योंकि जहां पर भी ये पाठ होता है वहां पर लक्ष्मी निवास करती हैं।

सपने में कुछ है

सपने सभी को आते है। किसी को अच्छे तो किसी को बुरे सपने जिसमें कुछ सपने अच्छे भविष्य की ओर संकेत देते तो वही कुछ आने वाली परेशानियों से हमें आगाह करते हैं। स्वप्न ज्योतिष के अनुसार कुछ सपने हमें धन प्राप्ति के लिए संकेत देते है। आप भी इन संकेतों के जरिए जान सकते है कि कब मिलेगा आपको अपार धन ।

- यदि कोई सपने में माचिस जलाता हुआ आपकी तरफ आगे की और बढ़ता हुआ दिखाई दे तो समझिए आपको धन मिलने वाला है।
- कई लोग उधार का लेन-देन करते है अगर आपके सपने में किसी को उधार पैसा देते है तो आपको बहुत जल्दी ही पैसा मिलने वाला है।
- जिस भी किसी व्यक्ति को अगर सपने में मोती ,मूंगा ,हार या मुकुट दिखाई देता है तो समझिए उसके घर में लक्ष्मी स्थाई रुप से निवास करती हैं
- जिसे सपने में कुम्हार घड़ा बनाता हुआ दिखाई दे तो उसे भविष्य में पैसा कमाने के कई मौके मिल सकते है । सपने में अगर किसी को पका हुआ संतरा दिखाई दे तो उसे बहुत जल्दी ही अमीर होने के कई रास्ते मिलगें

PDF compression, OCR, web-optimization using a watermarked evaluation copy of PDFCompressor

लड़कों के लिए ब्रह्मास्त्र

योगा, विश्व को आज के शहरीकरण के दौर में स्वस्थ रखने का रामबाण इलाज है, जिसके तर्ज पर ही 21 जून को विश्व योगा दिवस के मनाया जाता है। योग सभी के लिए है और इसका नियमित अभ्यास करने से सभी प्रकार की बीमारियां दूर होती हैं। यह न केवल बीमारियों से बचाता है बल्कि नियमित योग करने से शरीर मजबूत होता है। लड़कों को योग क्यों करना चाहिए, इससे उनको क्या-क्या फायदा होगा।

प्राकृतिक तौर पर लड़कियों का शरीर लड़कों के शरीर की तुलना में अधिक फ्लेक्सिबल होता है। इसलिए उम्र बढ़ने पर लड़कियों की तुलना में लडकों को रीढ़ या पीठ के दर्द की समस्या अधिक होती है। इन दर्द से छुटकारा पाने का एक ही इलाज है योगा। लड़के योगा कर अपने शरीर को फ्लेक्सिबल बना सकते हैं और रीढ़ या पीठ से संबंधित दर्द से छुटकारा पा सकते हैं। उन लड़कों के लिए तो योग ब्रह्मास्त्र का काम करता है जो ऑफिस में नौ घंटे बैठ कर काम करते हैं।

शरीर को मजबूत बनायें

अब आप सोच रहे होंगे की योग करके कैसे ताकतवर बना जा सकता है। ठीक है आप पुशअप करते हैं, डम्बल उठाते हैं। लेकिन ऐसा करने मात्र से ही अपने आप को ताकतवर ना समझे और अगर ताकतवार समझ रहे हैं तो पैर की उंगलियों में पांच मिनट के लिए खड़ें हो जाएं। अपनी सारी ताकत का अंदाजा आपको इन पांच मिनटों में हो जाएगा। जबकि योग करने के दौरान ये पांच मिनट आपको ताकतवर भी बनाएंगे और शारीरिक व मानसिक तौर पर चुस्त-दुरूस्त करेंगे।

तरो-ताजा रखेगा

योग सामान्य तौर पर सुबह-सुबह किया जाता है जिससे आप खुद को प्रकृति के नजदीक महसूस करेंगे। जो आपको पूरे दिन तरोताजा बनाए रखेगा और मानसिक तौर पर शांत बनाएगा। इससे चेहरे पर निखार आएगी और तनाव कम करेगा।

योग के अन्य फायदे

योग आपकी बुद्धि को तेज और शार्प बनाता है। साथ ही आपकी आत्मनियंत्रण की शक्ति तेज होती है।
संयमी और आहार-विहार में मध्यम मार्ग का अनुकरण करने वाला बनाता है।
बीमारियों से शरीर को दूर रखता है। श्वसन क्रिया को नियमन करता है।

मिर्गी रोग को जड़ से खत्म करता है ये प्राणायाम!

मिर्गी एक तरह का न्यूरोलॉजिकल डिसॉर्डर है। इस बीमारी से पीड़ित व्यक्ति को बार-बार दौरे पड़ते हैं। व्यक्ति का दिमागी संतुलन पूरी तरह बिगड़ जाता है। इस समस्या में रोगी को शरीर में खिंचाव होने लगता है इसके अलावा हाथ तथा पैरो में अकड़न होने लगती है। और वह व्यक्ति मूर्छित होकर गिर पड़ता है। योग बहुत प्रभावशाली है, मिर्गी में भी लोगो को इसका फायदा मिलता है। विशेषज्ञों की मानें तो योग के जरिये मिर्गी को भी ठीक किया जा सकता है। इसके लिए अनुलोम-विलोम को सबसे बेहतर माना जाता है।

अनुलोम-विलोम प्राणायाम

अनुलोम विलोम प्राणायम से मिर्गी का इलाज किया जा सकता है। इसे करने के लिए सबसे पहले सुखासन में बैठ जाये। अब इस आसान की शुरूवात नाक के बाये छिद्र से करे। सर्वप्रथम उंगली की सहायता से नाक का दाया छिद्र बंद करें व बाये छिद्र से लंबी सांस लें। इसके बाद बायें छिद्र को बंद करे, तथा दायें वाले छिद्र से लम्बी सांस को छोड़े। इस पूरी प्रक्रिया को कम से कम 10-15 मिनट तक दोहराइएं। साँस को छोड़ने और लेने का काम सहजता से करे। गलत तरीके से करने पर नुकसान हो सकता है।

योग के अन्य आसन जो मिर्गी में फायदेमंद

कटपालभाति प्राणायाम, भ्रामरी प्राणायाम, ताड़ासन, नटराजासन, वृक्षासन, हस्तपादासन, सर्वांगासन, हलासन, पवन-मुक्तासन।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

2nd

★ ANNIVERSARY ★

नेशन अलर्ट

मासिक पत्रिका

की द्वितीय वर्षगांठ पर हार्दिक शुभकामनाएं...

HECB

Hind Energy and Coal Benefication (India) Limited

Hind House, 1st Floor, Sai Parisar Commercial Complex,
Shrikant Verma Marg, Bilaspur [Chhattisgarh] 495001

EMail: Info Mail, HECB Mail, Web: www.hindenergy.com
Tele/Phone : +91 7752-429960 - 87, Fax : +91 7752-429685

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

2nd

★ ANNIVERSARY ★

नेशन अलर्ट

मासिक पत्रिका

की द्वितीय वर्षगांठ पर हार्दिक शुभकामनाएं...

सरदार जरनैल सिंह भाटिया

जिला अध्यक्ष, जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ - जे

राजनांदगांव, छत्तीसढ़

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor